डाक पंजीयन सं. जयपुर सिटी/101/2020-22 वर्ष : 08 अंक : 32 मूल्यः 5 रुपए पृष्ठ : 08

शिखर दृष्टि जीवन की... साप्ताहिक समाचार पत्र

हिलव्यू समाचार

जयपुर >>सोमवार, 14 फरवरी, 2022

R.N.I. No. RAJHIN/2014/56746 hillviewsamachar@gmail.com

सभी सुधि पाठकों को मातृ-पितृ दिवस एवं वैलेंटाइन दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

मुख्यमंत्री ने किया कॉन्स्टीट्यूशन क्लब ऑफ राजस्थान का शिलान्यास कार्यक्रम में बोले मुख्यमंत्री

कॉन्स्टीट्यूशन क्लब के निर्माण से संवैधानिक मूल्यों को मिलेगी मज़बूती

मुख्यमंत्री ने कहा... एग्जीक्यूशन में पवन अरोडा का मुकाबला नहीं

मुख्यमंत्री ने अरोड़ा को राजनीति में आने का दिया निमंत्रण

मुख्यमंत्री अशोक गहलोत राजस्थान आवासन मण्डल के काम से काफी खुश नजर आए। उन्होंने कहा कि एग्जीक्यूशन में आवासन आयुक्त पवन अरोडा का मुकाबला नहीं। आयुक्त ने अपने काम से सभी को प्रभावित किया है। साथ ही मुख्यमंत्री ने पवन अरोड़ा को राजनीति में आना का निमंत्रण दिया। उन्होंने नेता प्रतिपक्ष गुलाबचंद कटारिया द्वारा आयुक्त की गई प्रशंसा को सही बताया। आवासन मण्डल को आयुक्त पवन अरोडा ने नगरीय विकास मंत्री शांति धारीवाल के मार्गदर्शन में जिंदा कर दिया।

हिलव्यू समाचार

जयपुर। मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने विधानसभा के पास स्थित विधायक नगर पूर्व की भूमि पर बुधवार को राजस्थान आवासन मण्डल द्वारा बनाये जाने वाले कॉन्स्टीट्यूशन क्लब ऑफ राजस्थान का शिलान्यास एवं भूमि पूजन किया। इसके बाद उन्होंने शिलान्यास पटटिका का अनावरण किया। मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने कहा कि कई फैसले ऐसे होते हैं, जो इतिहास में दर्ज होते हैं। जयपुर में कॉन्स्टीट्यूशन क्लब ऑफ राजस्थान के निर्माण से प्रदेश का नाम इतिहास में दर्ज होगा। विभिन्न राजनीतिक दलों के विधायक इस क्लब में बैठकर सार्थक चर्चा करेंगे। इससे लोकतंत्र और संवैधानिक मूल्यों को मजबूती मिलेगी। उन्होंने कहा कि विधायक आवास परियोजना भी हमारी सरकार की इच्छा शक्ति से मूर्तरूप ले रही है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि वर्षों से लंबित विधायकों के आवास समस्या का समाधान करते हुए विधायक आवास परियोजना को मंजूरी दी। सभी के सहयोग से यह परियोजना साकार हो रही है। अब तक इसमें शानदार कार्य हुआ है। पांच माह में विधायक आवासों का 6 मंजिल का ढांचा तैयार होना काफी बड़ी बात है।

उन्होंने कहा कि कॉन्स्टीट्यूशन क्लब की सुविधाओं का लाभ वर्तमान विधायकों के साथ पूर्व विधायकों को भी मिलेगा। यह क्लब दिल्ली के कॉन्स्टीट्यूशन क्लब से भी शानदार होगा। उन्होंने कहा कि इस क्लब में अब 20 की जगह 50 कमरे बनेंगे। मुख्यमंत्री ने इससे पहले राजस्थान आवासन मण्डल द्वारा किए जा रहे कार्यों की प्रदर्शनी का भी अवलोकन किया। मुख्यमंत्री ने कॉन्स्टीट्यूशन क्लब ऑफ राजस्थान के मॉडल का भी अवलोकन किया।

विधानसभा अध्यक्ष डॉ. सीपी जोशी ने कॉन्स्टीट्यूशन क्लब के विचार को मूर्त रूप देने एवं वित्तीय प्रावधान करने के लिए मुख्यमंत्री को धन्यवाद दिया। उन्होंने कहा कि यहां विधायक एक-दूसरे से वैचारिक चर्चाएं कर पाएंगे एवं उनके आपसी संबंध प्रगाढ़ होंगे। उन्होंने उम्मीद व्यक्त की कि आवासन मंडल इस महत्वाकांक्षी परियोजना को समय पर पूरा करेगा। उन्होंने आयुक्त पवन अरोड़ा की प्रशंसा करते हुए कहा कि विधायक आवास परियोजना में जिस तरह काम हो रहा हैं, वह सीखने वाली बात है।

नगरीय विकास एवं आवासन मंत्री शांति धारीवाल ने कहा कि मुख्यमंत्री अशोक गहलोत का संवैधानिक संस्थाओं को मजबूत बनाने का जो ध्येय है, उसे विधायक आवास परियोजना एवं कॉन्स्टीट्यूशन क्लब जैसे कार्यों से आगे बढ़ाया जा रहा है। उन्होंने कहा कि कॉन्स्टीट्यूशन क्लब से विधायकों के बीच सद्भाव का माहौल बनेगा। मुख्यमंत्री की इच्छा के अनुरूप यह कार्य समय पर एवं गुणवत्ता के साथ पूरे किए जाएंगे।

धारीवाल ने कहा कि दिसम्बर 2018 में हमारी सरकार बनी तब राजस्थान आवासन मंडल हमें करीब-करीब बंद होने के हालात में मिला। उन्होंने कहा कि अधिशेष आवासों में से मण्डल द्वारा लगभग 12 हजार 500 मकानों का निस्तारण किया जा चुका हैं और लगभग 3700 करोड रूपये का राजस्व मण्डल ने अर्जित किया है। उन्होंने कहा कि आवासन आयुक्त पवन अरोडा और उनकी टीम ने बहुत बेहतरीन तरीके से यह काम किया है। अभी तक मण्डल द्वारा केवल मकान बनाने के साथ ही देश का पहला कोचिंग हब, सिटी पार्क, विधायक आवास परियोजना, एआईएस रेजीडेंसी एवं चौपाटियों जैसे अभिनव प्रोजेक्ट बनाये जा रहे है।

नेता प्रतिपक्ष गुलाबचन्द कटारिया ने बहुप्रतीक्षित विधायक आवास परियोजना को मूर्त रूप देने एवं विधायकों को शिफ्ट करने के चुनौतीपूर्ण कार्य को अमलीजामा पहनाने के लिए विधानसभा अध्यक्ष, मुख्यमंत्री एवं नगरीय विकास मंत्री और आयुक्त पवन अरोडा का साधुवाद दिया। उन्होंने कहा कि राजस्थान देश का पहला राज्य है, जिसने कॉन्स्टीट्यूशन क्लब निर्माण की पहल की है।

इससे पूर्व आयुक्त पवन अरोडा ने इस क्लब के बारें में ऑडियो विजुअल प्रस्तुतीकरण दिया। उन्होंने कहा कि कॉन्स्टीट्यूशन क्लब ऑफ राजस्थान का निर्माण दिल्ली स्थित कॉन्स्टीट्यूशन क्लब ऑफ इंडिया से बेहतर होगा एवं यहां सुविधाएं भी उससे अधिक होंगी। उन्होंने बताया कि यह क्लब 4 हजार 950 वर्ग मीटर भूमि पर बनाया जाएगा। इस क्लब का निर्मित क्षेत्रफल 1 लाख 84 हजार 480 वर्गफीट होगा। इस क्लब के निर्माण पर 80 करोड रूपये की राशि व्यय होगी। इस क्लब के निर्माण की समय सीमा 18 माह निर्धारित की गई है। मंत्रिमण्डलीय उप समिति द्वारा पहली ही बैठक में सर्व सम्मति से मण्डल द्वारा तैयार डिजाईन/परिकल्पना का अनुमोदन किया गया।

अत्याधुनिक सुविधाओं से सुसज्जित होगा यह क्लबः राजस्थान आवासन मण्डल द्वारा बनाये जाने वाला यह क्लब अत्याधुनिक सुविधाओं से सुसज्जित होगा। इस क्लब में रेस्टोरेन्ट, कॉफी हाउस, स्विमिंग पूल, ऑडिटोरियम, मीटिंग एण्ड कॉन्फ्रेन्स हॉल, लाईब्रेरी, जिम, सैलून, बैडमिन्टन एण्ड टेनिस कोर्ट, बिलियर्डस् व टेबल टेनिस, इन्डोर गेम्स सहित अतिथियों के ठहरने हेतु गेस्ट रूम्स का भी प्रावधान किया गया है। इससे पूर्व आवासन आयुक्त पवन अरोडा ने मुख्यमंत्री अशोक गहलोत और विधानसभा अध्यक्ष डॉ. सी.पी. जोशी का पुष्प गुच्छ भेंट कर स्वागत किया। राजस्थान आवासन बोर्ड कर्मचारी संघ के अध्यक्ष दशरथ सिंह, कार्यकारी अध्यक्ष भगवती प्रसाद सहित कार्यकारिणी के अन्य पदाधिकारियों ने मुख्यमंत्री अशोक गहलोत का स्वागत किया।

विधानसभा के सचिव महावीर प्रसाद शर्मा ने धन्यवाद ज्ञापित किया। इस अवसर पर राज्य मंत्रिपरिषद के सदस्य, विधायकगण, मुख्य सचिव श्रीमती उषा शर्मा सहित अन्य वरिष्ठ अधिकारी एवं जनप्रतिनिधि उपस्थित थे।

फिर से दोस्त हो जाएं तो शर्मिन्दा ना होना पड़े

गहलोत ने बीजेपी विधायकों से शायराना अंदाज में कहा कि दुश्मनी जमकर करो, लेकिन ये गुंजाइश रखो कि जब कभी हम दोस्त हो जाएं तो कभी शर्मिन्दा ना होना पड़े। उन्होंने कहा आपस में लड़ाई हमारी विचारधारी की है। व्यक्तिगत दुश्मनी नहीं है। कॉन्सटिट्यूशन क्लब का ये माहौल एसेम्बली में नहीं मिलेगा। मिलना भी नहीं चाहिए। क्योंकि वहां पक्ष और विपक्ष होता है। हम जब एमएलए-एमपी होते हैं, तब तो पब्लिक काम के लिए आगे पीछे घूमती है। जब कुछ नहीं रहते हैं, तो क्या स्थिति बनती है सब जानते हैं।

कॉन्सटिट्यूशन क्लब के शिलान्यास कार्यक्रम में मंच से कहा

बुढ़ापे में राजनीति से रिटायरमेंट सेहत के लिए हानिकारक, युवा नेताओं की रगड़ाई हो

जयपुर। मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने कहा कि बुढ़ापे में राजनीति करना हमारे जैसे बुजुर्ग नेताओं की सेहत के लिए बहुत जरूरी है। अंतिम सांस तक हमें जनता की सेवा करने की जरूरत है। गहलोत ने कॉन्सटिट्यूशन क्लब के शिलान्यास कार्यक्रम में मंच से कहा- पॉलिटिशियन को ज्यादा लोगों से मिलना पड़ता है तो दुखी होता है। जब उससे लोग मिलने नहीं आते तो भी वह दुखी होता है कि कहीं दुकान तो बंद नहीं हो रही है। उन्होंने कहा मैं प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को सलाह देना चाहूंगा कि 75 साल के बाद नेता को घर बैठाने का फैसला अच्छा नहीं है। कभी कांग्रेस में कामराज का फैसला हुआ था कि 60 साल के नेता को राजनीति से निकाल दो। 1960 में जब कामराज जी ने फैसला किया तब एवरेज उम्र 40 होती थी। अब औसत उम्र 70 साल है। यहां कई ऐसे मंत्री-नेता बैठे हैं। हेमाराम चौधरी, शांति धारीवाल, गुलाबचन्द कटारिया, डॉ सीपी जोशी जैसे नेता क्या बूढ़े दिखते हैं? 10 किलोमीटर रोज चलते हैं। गुलाबचन्द कटारिया को राज्यपाल बना दें तो बात अलग है।

हम रिटायर हो जाएं तो कहां जाएंः गहलोत ने उम्र को लेकर राजेन्द्र राठौड़ से कहा आप तो स्व. भैरों सिंह शेखावत के शागिर्द रहे हो। बताओ हम रिटायर हो जाएं तो कहां जाएं? घर बैठ जाएंगे तो लोग मिलने भी नहीं आएंगे। स्वास्थ्य बिगड़ जाएगा। आपको कह दिया गया कि उम्र हो गई है, घर बैठ जाओ तो स्वास्थ्य बिगड़ जाएगा। बुढ़ापे में स्वास्थ्य खराब हो जाए तो क्या मतलब निकलेगा। हमने ऐसा क्या गुनाह किया है? जिन्दगी जनता के काम में लगा दी, अब बीमार हो जाएं? हम अपना हुलिया क्यों बिगाड़ें?

युवा नेताओं की होनी चाहिए रगड़ाईः गहलोत ने कहा जो युवा नेता-कार्यकर्ता राजनीति में ऊपर आ रहे हैं, उनकी रगड़ाई यानी ग्रूमिंग जरूरी है। जो संगठन में रहकर लम्बे वक्त तक रगड़ाई करवाकर कुर्सी पर आता है उसका व्यवहार, काम करने का तरीका, अनुभव सब अलग ही होता है। कोई सीधा राज्यसभा में चला जाता है या बिना संगठन में रगड़ाई करवाए आ जाता है तो उसके व्यवहार में बहुत अंतर होता है। मैं चाहता हूँ नए लोग भी मंत्री, मुख्यमंत्री सभी पदों पर आएं। लेकिन उनकी ग्रूमिंग होना और संगठन में काम करके आना जरूरी है। मैंने भी 40 साल रगड़ाई करवाई है। आज राजनीति में 50 साल हो गए हैं।

लोग कहते हैं पक्ष और विपक्ष मिले हुए हैंः कार्यक्रम में गहलोत ने विपक्ष के नेताओं पर भी चुटकी ली। गहलोत ने कहा नेता प्रतिपक्ष गुलाबचन्द कटारिया ने जिस तरह का प्रजेंटेशन मंच पर दिया, ऐसा लगता ही नहीं है कि विधानसभा में उन्होंने रीट मामले में सीबीआई जांच की मांग की हो। राजेन्द्र राठौड़ भी इतने प्यार से बैठे हैं, जैसे विधानसभा में कुछ हुआ ही नहीं हो। कुछ ही मौके मिलते हैं जब पक्ष-विपक्ष साथ-साथ बैठते हैं। कई बार पब्लिक कह देती है कि दोनों मिले हुए हैं।

मुझे जन्मदिन पर नहीं बुलाते थे राठौड़ः वसुंधरा राजे के कार्यकाल का उदाहरण देते हुए कहा कि एसेंबली समाप्त होने पर पक्ष-विपक्ष के विधायकों को फिल्म दिखाने सिनेमाहॉल ले जाती थीं। मैंने एतराज किया कि दिनभर तो तुम लोग लड़ते हो और फिर साथ में फिल्म देखते हो। लोग कहेंगे कि आपस में मिले हुए हैं। गहलोत ने राजेन्द्र राठौड़ की ओर इशारा करते हुए कहा कि राठौड़ तो गाने गाने के् शौकीन हैं। पहले इनका घर मेरे पड़ोस में था तो ये जन्मदिन पर गाने गाते थे। लेकिन मुझे इनवाइट नहीं करते थे।

हिजाब विवाद पहुँचा जयपुर

कस्तूरी देवी कॉलेज में बुर्का-हिजाब पहनकर आईं छात्राएँ, कॉलेज में नहीं मिली एंट्री

हिलव्यू समाचार

जयपुर। कर्नाटक के बाद अब राजस्थान में भी हिजाब पर विवाद शुरू हो गया है। जयपुर के चाकसू में शुक्रवार को कुछ छात्राएं कस्तूरी देवी कॉलेज में हिजाब और बुर्का पहनकर पहुंचीं। छात्राओं को देख प्रबंधन ने कॉलेज यूनिफॉर्म पहनकर आने की बात कही। इस पर छात्राएं नाराज हो गईं और विरोध शुरू कर दिया। छात्राओं ने अपने परिजनों को भी कॉलेज बुला लिया। शुक्रवार सुबह चाकसू में कुछ छात्राएं बुर्का पहनकर कॉलेज पहुंच गईं। कस्तूरबा कॉलेज प्रबंधन ने छात्राओं को मुख्य भवन में प्रवेश देने से मना कर दिया और कॉलेज यूनिफॉर्म में आने के लिए कहा। नाराज छात्राओं ने हिजाब पहनकर ही कॉलेज में एंट्री देने की मांग को लेकर विरोध शुरू कर दिया। विरोध बढ़ता देख कॉलेज प्रबंधन ने मुख्य भवन का गेट बंद कर दिया। मौके पर पहुंचे छात्राओं के परिजन और ग्रामीणों ने हिजाब में ही छात्राओं को प्रवेश देने की मांग की, लेकिन कॉलेज प्रबंधन नहीं माना। कॉलेज पहुंची छात्राओं ने कहा कि भारत के संविधान में सभी वेशभूषा को मान्यता दी गई है। ऐसे में हमारे धर्म के लिबास को पहनने से किसी को कोई आपत्ति नहीं होनी चाहिए। कुछ

सांप्रदायिक लोग बेवजह हमें परेशान कर रहे हैं, जो सरासर गलत है। वहीं, इस पूरे मामले पर कॉलेज प्रबंधन ने चुप्पी साध ली है। विवाद बढ़ने के कुछ ही देर बाद मौके पर पहुंची पुलिस ने समझाइश कर मामला शांत करवाया। चाकसू पुलिस थाने के उप निरीक्षक जितेंद्र कुमार वर्मा ने बताया कि बुर्का-हिजाब पहनने को लेकर पूरा विवाद हुआ था, लेकिन अब मामला पूरी तरह शांत है।

कॉलेज के सहायक निदेशक सुमित शर्मा ने बताया कि पिछले कुछ दिनों से छात्राएं लगातार बुर्का पहनकर कॉलेज आ रही थीं। लगातार कॉलेज प्रशासन द्वारा छात्राओं को यूनिफॉर्म में आने के लिए बोला जा रहा था। छात्राओं ने कॉलेज प्रबंधन की बात को दरकिनार करते हुए बुर्का-हिजाब पहनकर कॉलेज आना जारी रखा, जिसके बाद आज मजबूरन हमें सख्ती दिखाते हुए छात्राओं को रोकना पड़ा। इसके बाद छात्राएं कुछ असामाजिक तत्वों के साथ कॉलेज पहुंच गईं और जमकर नारेबाजी करने लगीं।

टोंक जिले में मुस्लिम समाज के लोगों ने दिया धरनाः हिजाब मामला कर्नाटक से उठ अब राजस्थान की सीमाओं में मामले को लेकर अलग-अलग स्थानों से खबरें आने लगी हैं. जयपुर के एक निजी कॉलेज में बवाल मचने के बाद टोंक जिले में मुस्लिम समाज एकजुट होकर कलेक्ट्रेट पर धरने पर बैठ गए हैं. हिजाब पर शिक्षण संस्थान द्वारा लगाए गए प्रतिबन्ध के विरोध में आज टोंक ज़िले में भी मुस्लिम समाज से जुड़े लोगों ने जिला कलेक्ट्रेट पर धरना प्रदर्शन करते हुए मामले को लेकर अपना कड़ा विरोध दर्ज कराया।

राज्यपाल ने लौटाया बाल-विवाह रजिस्ट्रेशन बिलः लिखा

यह बिल बाल विवाह रोकने के प्रावधानों के ख़िलाफ़, संशोधन करके भेजें

हिलव्यू समाचार

जयपुर। राज्यपाल ने बाल विवाह के रजिस्ट्रेशन के प्रावधान वाले विवादित बिल को लौटा दिया है। राज्यपाल ने बिल को बाल विवाह रोकने के कानून के खिलाफ बताते हुए इसमें संशोधन करने को कहा है। बिल लौटाने का लेटर विधानसभा को भेज दिया है। इस बिल में 18 साल से कम उम्र की लड़की और 21 से कम उम्र के लड़के की शादी का भी रजिस्ट्रेशन करने का प्रावधान था।

राजस्थान विवाहों का अनिवार्य पंजीकरण संशोधन विधेयक 2021 को पिछले साल 17 सितंबर को विधानसभा में पारित किया गया था। 24 सितंबर 2021 को राज्यपाल की मंजूरी के लिए भेजा गया था। इस बिल का बीजेपी ने सदन में भारी विरोध किया था और उस दिन बहिष्कार किया था।

बाद में यह मामला सुप्रीम कोर्ट तक पहुंचा था। विवाद के बाद मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने राज्यपाल से बिल वापस भेजने का आग्रह किया था। सीएम ने बयान देने के बाद राज्यपाल से मुलाकात करके भी यह बिल वापस करने का आग्रह किया था। यह बिल उसी वक्त रुक गया था। अब राज्यपाल ने इसे लौटा दिया है।

माता-पिता और संरक्षक के आवेदन करने का था प्रावधानः वर ने 21 साल और वधू ने 18 साल की आयु पूरी नहीं की है तो बिल में उनके माता पिता या संरक्षक को शादी के 30 दिन के भीतर रजिस्ट्रेशन का आवेदन देने का प्रावधान किया था। इस प्रावधान से साफ था कि बाल विवाहों का भी अनिवार्य रूप से रजिस्ट्रेशन किया जाता।

राज्यपाल ने लिखा-राष्ट्रीय बाल अधिकार आयोग ने भी आपत्ति जताई हैः राज्यपाल ने बिल को लौटाते हुए विधानसभा को चिट्ठी लिखकर सूचना भेजी है। राज्यपाल ने लिखा है कि विवाहों के अनिवार्य रजिस्ट्रीकरण संशोधन बिल की धारा 8 की उपधारा 1 में किया गया संशोधन बाल विवाह रोकथाम कानून 2006 की धारा 9,10, 11 और 12 का साफ उल्लंघन है। राष्ट्रीय बाल अधिकारिता आयोग ने भी इस बिल पर आपत्ति जताई है।

सरकार ने बिल लौटाने का आग्रह कियाः राज्यपाल ने लिखा- इस बिल के बारे में सरकार ने अवगत कराया है कि समाज के कुछ वर्गों में भ्रांति हो गई है कि इस संशोधन बिल में बाल विवाह के राजिस्ट्रेशन का प्रावधान होने से उसे कानूनी मान्यता मिलेगी। इस प्रावधान में बदलाव करने के लिए राज्य सरकार ने बिल लौटाने का आग्रह किया है।

विधानसभा परीक्षण करे, बिल के कौन से प्रावधान कानून के खिलाफः राज्यपाल ने लिखा - विधानसभा इस बिल पर फिर से विचार करते हुए इस बिंदु पर भी परीक्षण करें कि इसके संशोधन बाल विवाह रोकथाम कानून 2006 के किस किस प्रावधान के अनुसार कानून सम्मत नहीं हैं।

hillviewsamachar@gmail.com

हिलव्यू समाचार

02

जयपुर >>सोमवार, 14 फरवरी, 2022

संपादकीय

देश में ऐसे परिवेश का निर्माण करना होगा जिसमें चुनाव जनहित में नई संभावनाओं को जन्म दे सकें

विधानसभा चुनाव तो केवल पांच प्रांतों में ही हो रहे हैं, मगर देश भर में सभी संचार माध्यम और अधिकांश नेता उसी के संबंध में चर्चा करने, रणनीति बनाने और विश्लेषण करने में व्यस्त हैं। आजकल हर स्तर के चुनावों में प्रदेश की सरकारों का पूरा तंत्र उनकी व्यवस्था में लग जाता है। लोकसभा से लेकर पंचायतों तक के चुनावों का यह सिलसिला लगभग प्रतिवर्ष चलता रहता है। सबसे पहले प्रशासन इस कार्य में अध्यापकों को लगाता है। उसका सीधा प्रभाव बच्चों की शिक्षा और विशेषकर उसकी गुणवत्ता पर पड़ता है। अनेक अवसरों पर लोकसभा के चयनित सदस्य विधानसभा का या विधानसभा सदस्य लोकसभा का चुनाव लड़ते हैं। जीत जाने पर पहला पद छोड़ देते हैं। फिर उपचुनाव होता है। उसका सारा बोझ जनता उठाती है। ऐसा ही तब भी होता है जब कोई व्यक्ति दो जगह से चुनाव लड़कर दोनों क्षेत्रों से विजयी होता है। वहीं दागी उम्मीदवारों ने अपना एक स्थायी मुकाम चुनाव व्यवस्था में बना लिया है। अधिकांश राजनीतिक दल इन पर अपनी निर्भरता स्वीकार करने से भी गुरेज नहीं करते हैं।

कुछ संस्थाएं समय-समय पर चयनित, परंतु दागी प्रतिनिधियों के विरुद्ध दर्ज मुकदमों से संबंधित आंकड़े तैयार करती हैं। उन्हें प्रचारित और प्रसारित करती हैं। चूंकि यह सब दशकों से होता आ रहा है, ऐसे में इसे अब चुनाव व्यवस्था का 'आवश्यक' अंग सा मान लिया गया है। ठोस चुनाव सुधारों की आवश्यकता को अब कोई दल खास महत्व नहीं देता। खानापूर्ति के लिए इसे अनेक अवसरों पर बस दोहरा दिया जाता है। यह निश्चित ही चिंताजनक स्थिति है। इससे लोकतंत्र का अहित हो रहा है। ऐसा तब हो रहा है जब पिछले सात दशकों में भारत का मतदाता लोकतंत्र के मूल मंतव्य को समझ गया है। वह अपने वोट का महत्व जान गया है।

जिन लोगों ने स्वतंत्रता के बाद के 20 वर्षों को निकट से देखा है, वे ही उस समय जनता और चयनित प्रतिनिधियों के मध्य पारस्परिक सम्मान-सेवा की भावना का सही वर्णन कर सकते हैं। भारतीय जनतंत्र और चुनावतंत्र में इस पारस्परिक विश्वास का ह्रास लोकतंत्र की अनेकानेक सकारात्मक उपलब्धियों पर भारी पड़ता जा रहा है। दुर्भाग्य से सामान्य मतदाता भी हर स्तर के चुनाव में लगातार कमजोर होते नैतिक पक्ष को अब अन्यमनस्क भाव से देखने लगा है। एक सशक्त लोकतंत्र में यह स्थिति अस्वीकार्य मानी जानी चाहिए। समाज के प्रबुद्ध वर्ग को राजनीति से जुड़ी वैचारिक प्रतिबद्धताओं से ऊपर उठकर आगे आना होगा। देश में ऐसे वातावरण का निर्माण करना होगा जिसमें चुनाव जनहित में नई संभावनाओं को जन्म दे सकें, लोगों में जनतंत्र के प्रति विश्वास और आस्था को दृढ़ कर सकें। एक ऐसी व्यवस्था बने, जिसमें उसी व्यक्ति का चयन हो, जो जनसेवा में अपनी संलग्नता को स्थापित कर चुका हो, जिसके पास मतदाता जाकर चुनाव लडने का अनुरोध करें और जिसकी आर्थिक स्थिति उसके चयन में बाधा न बने। 1977 में मतदाताओं ने अपने मत के महत्व को पहचाना था। ऐसे-ऐसे लोग लोकसभा सदस्य चुने गए, जिनके पास व्यय करने के लिए धन नहीं था। वहीं 1980 में जो हुआ, वह अकल्पनीय था। वे आपस में ही झगडने लगे। वे सभी सत्ता से उतार दिए गए। यह देश का दुर्भाग्य ही कहा जाएगा कि इस सघन अनुभव के बाद भी देश में क्षेत्रीयता और जातीय समीकरणों पर आधारित राजनीतिक दल तेजी से पनपते रहे। जातीय समीकरणों पर आधारित दलों को अपने साथ जोडने के लिए राष्ट्रीय दल उत्सुक रहने लगे हैं। जिस ढंग से चुनाव के कुछ दिन पहले दल-परिवर्तन हो रहा है। दल-बदलुओं का जोर-शोर से स्वागत हो रहा है, वह और कुछ भी हो, लोकतंत्र तो नहीं ही है।

यदि स्वतंत्रता संग्राम के समय जागृत राष्ट्र के प्रति निस्स्वार्थ समर्पण की भावना उसी स्तर पर बनी रहती तो आज देश ने उन समस्याओं का समाधान प्राप्त कर लिया होता, जिनसे पंक्ति के अंतिम छोर पर खड़ा व्यक्ति भी सम्मानपूर्ण मानवीय जीवन जी सकता। गरीबी हटाओ का नारा करीब पांच दशक पहले लगा था, लेकिन गरीबों की संख्या बढ़ती ही रही। यदि पचास साल पहले इस दिशा में ईमानदारी से प्रयास किए गए होते तो गांवों और किसानों की स्थिति बदल गई होती। यह मानना ही होगा कि देश के गांवों और किसानों की स्थिति संवारने के प्रयास प्रारंभ से ही अत्यंत कमजोर और दिशाहीन रहे। इसके लिए मुख्य जिम्मेदारी चयनित प्रतिनिधियों की ही मानी जानी चाहिए। पिछले छह-सात वर्षों में गांवों और किसानों की स्थिति सुधारने के प्रयास हुए, लेकिन उन प्रयासों को आगे बढ़ाने में राजनीतिक वैमनस्यता आड़े आ रही है। कितना अच्छा होता यदि गांव में स्वास्थ्य, शौचालय, पीने के पानी, भवन निर्माण, बैंक खाते, किसान के पास सम्मान निधि का सीधे पहुंचना, किसानों की आय दो-गुनी करने की योजनाएं जैसे नवाचार हर राजनीतिक दल और हर नेता का समर्थन पाते। ऐसा होता तो देश गांवों और किसानों के प्रति अपना कर्तव्य ईमानदारी से निभा रहा होता। भारत के समेकित विकास की सार्थकता तभी स्थापित होगी जब देश का किसान और कृषि से जुड़े लोग गरीबी रेखा से ऊपर आ जाएंगे। यदि गांव में सभी सामान्य सुविधाएं उपलब्ध हो जाएंगी तो ग्रामीण जीवन के प्रति शहरों में नया आकर्षण उत्पन्न हो सकेगा।

चुनावों को दलगत राजनीति से अलग कर देखने की अपेक्षा युवाओं से ही की जा सकती है। वे यदि महात्मा गांधी, डा. राजेंद्र प्रसाद, नेताजी सुभाष चंद्र बोस, डा. बाबा साहब आंबेडकर जैसे राष्ट्र के प्रति पूर्ण-रूपेण समर्पित जीवन को अपने अंतर्मन में उतर लें तो हर चुनाव लोकतंत्र की आत्मा के प्रति व्यावहारिक श्रद्धा अर्पित करने का समारोह बन सकता है।

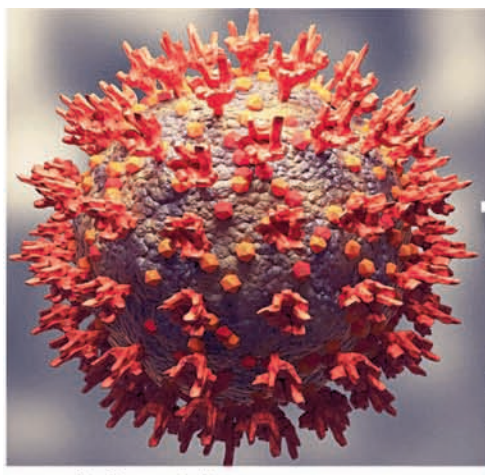

4-5 दिन में घटने लगता है ओमिक्रॉन का असर

कोरोना का नया वैरिएंट ओमिक्रॉन तेजी से फैल रहा है, लेकिन राहत की बात यह है कि इसके संक्रमण का असर 4-5 दिन में कम होने लगता है. इसके साथ ही इसका दुष्प्रभाव फेफड़ों पर नहीं पड़ रहा है जिससे निमोनिया होने की आशंका खत्म हो जाती है. लेकिन इसके इलाज को लेकर लोगों में काफी भ्रम है. जानते हैं इसके बारे में-

प्रोटीन व लिक्विड डाइट ज्यादा लें

युवाओं में हाई ग्रेड व बुजुर्गों में कम फीवर

वायरल संक्रमण के 70 फीसदी मामलों में उल्टी-दस्त और पेट में मरोड़ों की समस्या आम होती है. इसमें भी यही देखा जा रहा है. इसके साथ ही नाक से पानी आना, शरीर में दर्द, बुखार और सीने में भारीपन जैसे लक्षण आ सकते हैं. युवाओं में हाई ग्रेड फीवर 102 फारेनहाइट तक जबकि बुजुर्गों में 100 के आसपास ही रहता है. ठीक होने के बाद एक सप्ताह तक सूखी खांसी भी रह सकती है. अगर इससे ज्यादा दिनों तक रहती है तो डॉक्टर को दिखाएं.

हेल्दी डाइट भी है अहम

अभी कोरोना के मामलों में मरीज को अधिक मात्रा में लिक्विड और प्रोटीन डाइट लेनी चाहिए. प्रोटीन डाइट अधिक लेने से नये सेल्स अधिक बनते हैं, इससे रिकवरी जल्दी होती है और लिक्विड अधिक मात्रा में लेने से मसल्स पेन कम होता है. दूध की जगह छाछ, लस्सी, सूप, मौसमी फलों का जूस आदि ले सकते हैं. यहीं प्रोटीन के लिए पनीर, मशरूम और अंकुरित चीजें भी अधिक मात्रा में लेने से आराम मिलेगा.

स्टेरॉयड बिल्कुल ही न लें

कुछ मरीजों की शिकायत मिली है उनके इलाज में स्टेरॉयड दवाइयां दी गई हैं. लेकिन कोरोना के नये वैरिएंट में स्टेरॉयड की जरूरत नहीं है. इसे लेने से गंभीरता बढ़ सकती है. दूसरे साइड इफेक्ट्स भी हैं. संक्रमण के समय स्टेरॉइड देने से वायरस लोड बढ़ता है.

एंटी वायरल खुद से न लें

इसके सभी मरीजों में एंटी वायरल की जरूरत नहीं पड़ती है. जिन्हें वैक्सीन नहीं लगी है या फिर रिस्क ग्रुप में आते हैं जिनकी उम्र 65 वर्ष से अधिक है, उन्हें डॉक्टरी सलाह की जरूरत पड़ रही है. खुद से कोई भी एंटीवायरल न लें. इन दवाओं के दुष्प्रभाव भी ज्यादा होते हैं.

पैरासिटामॉल व ओआरएस घोल लें

ओमिक्रॉन में हाथ-पैरों में तेज दर्द होता है. इसमें पेनकिलर लेने से दूसरे अंगों को नुकसान होगा. केवल पैरासिटामॉल व दिन में 4-5 गिलास ओआरएस का घोल लें. तीसरे दिन से आराम मिलना शुरू हो जाएगा. नाक से पानी आने पर एंटीएलर्जिक दवा लें. ज्यादा दिक्कत होने पर डॉक्टर को दिखाएं.

नापते रहें ऑक्सीजन का स्तर

जिनमें कोरोना संक्रमण की पुष्टि हो चुकी है, उन्हें हर 2-3 घंटे के अंतराल में अपना ऑक्सीजन का स्तर नापते रहना चाहिए. इसके साथ ही कोशिश करें कि लिक्विड चीजें लेते रहें. शरीर में पानी की कमी न होने दें. इससे भी यह समस्या बढ़ती है.

सांस फूलने लगे या ऑक्सीजन 94 से कम हो

कुछ मरीजों में कोरोना के गंभीर लक्षण भी सामने आ रहे हैं. खासकर उन मरीजों में जिन्होंने वैक्सीन नहीं लगवाई है. इसके साथ ही जिन्हें पहले से कोई क्रॉनिक बीमारी जैसे डायबिटीज, अस्थमा, ब्लड प्रेशर या हृदय रोग है तो उन्हें भी इसके संक्रमण की समस्या हो सकती है. अगर किसी मरीज की सांस फूल रही है, अचानक से ऑक्सीजन का स्तर घट रहा या फिर ऑक्सीजन का स्तर 94 से कम हो रहा है तो ऐसी स्थिति में मरीजों को तत्काल डॉक्टर से संपर्क करना चाहिए.

इनका ध्यान रखें

अपनी बारी आने पर वैक्सीन लगवाएं, मास्क लगाएं, सोशल डिस्टेंस का ध्यान रखें. बाहर निकल रहे हैं तो हर थोड़ी देर में हाथों को सैनिटाइज करें. कोरोना के डेल्टा वैरिएंट की तुलना में ओमिक्रॉन से 10-12 गुना अधिक तेजी से संक्रमण फैल रहा है.

साल भर बाद बूस्टर डोज लेना सही

कोविड-19 की तीसरी लहर के बीच तीसरी डोज के रूप में प्रिकॉशन या बूस्टर डोज देना शुरू किया गया है. ऐसे में 60 साल से अधिक व गंभीर रोगों से ग्रसित लोगों को पहले यह डोज दी जाएगी.

- वैक्सीन के बाद भी कोविड हो सकता है, पर कॉम्प्लिकेशंस या अस्पताल भर्ती न के बराबर हैं. जिन्हें कोविड हो चुका है, उन्हें 2 डोज काफी है.
- यह डोज फ्रंटलाइन वर्कर्स, 60 से अधिक उम्र वालों व गंभीर रोगों से ग्रसित लोगों को दी जाएगी.
- विदेश यात्रा कर रहे हों तो तीसरी डोज लगवाना अच्छा होगा. यह भी उसी कंपनी की हो जिसकी पहले 2 वैक्सीन ली हैं.
- कमजोर इम्यूनिटी वाले मोटापाग्रस्त, रोग ग्रसित, 80 से ज्यादा उम्र, अवसादग्रस्त लोगों को भी यह लेनी चाहिए.

स्वेच्छा से लें तीसरी डोज

बूस्टर लेना स्वेच्छा पर है. बेहतर इम्यूनिटी के लिए नियमित व्यायाम, प्राणायाम, पौष्टिक खाना, अपनों का साथ और मन में प्यार व संवेदनशीलता रोगों से मुक्त रखेंगे. मास्क, दूरी, सैनिटाइजेशन व हाथ धोकर कोविड से बचा सकता है.

मुंह सूखा होने से भी आती है दुर्गंध

मुंह से दुर्गंध केवल बीमारी के कारण ही नहीं, बल्कि सफाई न होने या मुंह सूखने से भी आती है. मुंह से दुर्गंध आना कई बार बहुत-सी बीमारियों के कारण भी हो सकता है. हालांकि हर थोड़ी देर में थोड़ा-थोड़ा पानी पीते रहने से भी इसमें राहत मिलती है. यहां कुछ कारगर टिप्स हैं -

- जिन्हें ज्यादा समस्या होती है, वे खाने के बाद हरी इलायची, लौंग या सौंफ के दाने चबाएं. इससे आराम मिलता है.
- खाने के बाद दांतों की सफाई से भी दुर्गंध में राहत मिल जाती है. रात में सोने से पहले फ्लास करते हैं तो दांतों की बीमारियों से भी बचाव होता है.
- आयुर्वेद में गंडूस क्रिया होती है. इसमें मुंह में तिल, सरसों या नारियल के तेल को मुंह में भरकर एक-दो मिनट तक रखना होता है. इससे भी दुर्गंध नहीं आती है.

संतरा खाने से घटता है तनाव

सर्दी में मिलने वाले संतरे में विटामिन सी के साथ फोलिक एसिड, पोटेशियम भी भरपूर मात्रा में होता है. इससे ब्लड प्रेशर नियंत्रित रहता है. इससे ब्रेन में ऑक्सीजन की पूर्ति अधिक होती है जिससे तनाव और अवसाद भी कम होता है. विटामिन सी और एंटीऑक्सीडेंट से युक्त होने के कारण यह इम्युनिटी बढ़ाने के साथ ही मौसमी संक्रमण से बचाता और त्वचा में निखार भी लाता है. इसमें लो कैलोरी होती है, इसलिए इसे स्नैक्स के रूप में खाते हैं. पोषक तत्वों से भरपूर संतरे से वजन भी नियंत्रित रहेगा.

बदहजमी में लें तुलसी रस-शहद

तुलसी पत्ते का रस पीने से उल्टी की समस्या में राहत मिलती है. पेट के कीड़े भी मर जाते हैं. आधा चम्मच तुलसी रस में एक चम्मच शहद मिलाकर चाटने से जी मिचलाने और बदहजमी की समस्या में आराम मिलता है. इसे दिन में दो बार ले सकते हैं. गन्ने का रस पीने से शीतलता मिलती है. यूरिन में जलन और नकसीर में भी लाभकारी है. लेकिन ज्यादा देर तक रखा जूस न पीएं.

यूनानी दिवस

यूनानी के छह सिद्धांत जो रखते हैं हमें स्वस्थ

यूनानी चिकित्सा पद्धति में मिजाज (प्रकृति) बहुत मायने रखता है. इसमें व्यक्ति से लेकर रोग तक की प्रकृति पर ध्यान दिया जाता है. यूनानी में बताए छह सिद्धांत अपनाकर जीवनशैली व इम्युनिटी बेहतर की जा सकती है-

1. हवा-ए-मुहीत (आसपास की आबोहवा)
शुद्ध हवा व बेहतर पर्यावरण सबसे जरुरी है. अत: अपने आसपास शुद्ध हवा रहे और क्षेत्र प्रदूषण से मुक्त रहे. तभी बेहतर ऊर्जा मिल पाएगी.

2. माकूल-व-मशरूब (खाने-पीने की चीजें)
इस पद्धति में प्रकृति के अनुरूप खाने-पीने की चीजों को निर्धारित किया. यदि वह इसके अनुसार चलता है तो स्वस्थ रहता है.

3. हरकत व सुकून बवनी (शारीरिक कार्य व आराम)
जितना काम करें, उसी की तुलना में शरीर को आराम भी दिया जाना जरूरी है. शरीर की क्षमता के अनुसार काम व आराम मिले.

4. हरकत व सुकून नफसानी (मानसिक सक्रियता व आराम)
इसके अनुसार भी आराम जरूरी है. मानसिक थकने पर थोड़ी देर के आराम जरूर करें.

5. नीम व यकजा (सोना व जागना)
शारीरिक व मानसिक रिकवरी के लिए सही समय एवं सही मात्रा में नींद लेना अनिवार्य (6 से 8 घंटे) है.

6. एहतिबास व इस्तेफ्राग
आवश्यक चीजें शरीर में रुकना व खराब चीजें बाहर निकलना जरूरी है. यदि इन दोनों में संतुलन रखकर व्यक्ति स्वस्थ रह सकता है.

डाइट कंट्रोल भी जरूरी

ओवरईटिंग से बचें. उतना ही खाएं जितना पचा पाएं. पेट कभी भी इतना नहीं भरे कि थकान जैसा महसूस हो. खाने के बाद घूमना जरूरी है.

कुछ खास नुस्खे

- शहद के एंटी-बैक्टीरियल गुण खांसी से जल्द राहत दिलाते है. रात को सोने से पहले 1 चम्मच शहद लें. आधा चम्मच शहद में थोड़ी इलायची और नींबू का रस डालकर दिन में 3 बार लें.
- अदरक के टुकड़े शहद के साथ मिलाकर खाने से खांसी में तुरंत राहत मिलती है. अदरक का जूस निकालकर शहद की कुछ बूंदे मिलाकर लें.
- दूध में हल्दी मिलाकर पीना वैसे भी फायदेमंद है और यह खांसी में भी कारगर है. हल्दी का एंटीबैक्टीरियल (व एंटीवायरल) गुण आराम दिलाता है. दूध फीका ही लें. इसमें शहद व थोड़ी हल्दी मिला सकते हैं.

ज़्यादा ग्रीन टी से पाचन की दिक़्क़त

ग्रीन टी पीने के बहुत फायदे हैं लेकिन इसके ज्यादा मात्रा में सेवन से शरीर को नुकसान भी होता है. अक्सर लोग वजन कम करने के लिए दूध की चाय की जगह ग्रीन टी पीते हैं. लेकिन 2-3 कप से अधिक पीने से शरीर में कैफीन की मात्रा बढ़ती और पानी की कमी होने लगती है. ग्रीन टी का सेवन खाली पेट करने से उल्टी-दस्त व एसिडिटी की समस्या हो सकती है.

दवा के साथ न लें

इससे यूरिन अधिक निकलता है. शरीर में पानी व इलेक्ट्रोलाइट की कमी होने लगती है. दवा लेते हैं तो उसके साथ ग्रीन टी लेने से बचें. इससे लिवर पर ज्यादा दबाव पड़ता है. इसे ज्यादा पीने से शरीर में आयरन की कमी हो सकती है. पहले से आयरन की कमी हो तो स्थिति और ज्यादा खराब हो सकती है.

फोम रोलर एक्सरसाइज

फोम रोलर एक तरह की दर्द निवारक एक्सरसाइज है. इससे हमारा मतलब यह है कि इस एक्सरसाइज की मदद से शरीर के किसी भी हिस्से के दर्द को दूर किया जा सकता है. इसके लिए बस आपको एक 18 इंच या 36 इंच के फोम रोलर की जरूरत पड़ेगी.

तरीका

फोम रोलर एक्सरसाइज करने के लिए सबसे पहले फोम रोलर को उस जगह पर रखें, जहां आपको दर्द है या फिर आप शरीर के जिस हिस्से की मांसपेशियों की मसाज करना चाहते हैं. इसके बाद हल्का सा दबाव बनाते हुए आपको कुछ सेकेंड धीरे-धीरे ऊपर नीचे और आगे पीछे होना है. अगर आप पहली बार इस एक्सरसाइज को कर रहे हैं तो कुछ दिनों तक इसका समय 15 से 20 सेकेंड रखें, फिर समय सीमा को बढ़ाकर 40 से 60 सेकेंड कर दें.

खास टिप्स

शुरुआत में इस एक्सरसाइज को अधिक समय तक न करें, बल्कि धीरे-धीरे इसका समय बढ़ाएं. एक्सरसाइज करते समय सामान्य रूप से सांस लेते रहें और अपनी सांस को रोककर न रखें. इस एक्सरसाइज को करते समय अपने सिर और कूल्हों पर अधिक दबाव न डालें और न ही एक्सरसाइज के दौरान अपने शरीर के किसी भी हिस्से को जकड़ें क्योंकि इससे चोट लगने की संभावना बढ़ जाती है.

सावधानियां

फोम रोलर को कभी भी अपनी हड्डी के जोड़ों पर रोल न करें क्योंकि इससे उन पर नकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है. अगर शरीर के किसी हिस्से में चोट लगी हो या सर्जरी हुई है तो इस एक्सरसाइज को न करें. गर्भवती महिलाएं इस एक्सरसाइज को करते समय संतुलन बनाने में अधिक सावधानी बरतें या फिर इस एक्सरसाइज को न ही करें. बेहतर होगा कि आप शुरुआत में इस एक्सरसाइज का अभ्यास किसी ट्रेनर की निगरानी में करें.

फायदे

फोम रोलर एक्सरसाइज तंग मांसपेशियों को ठीक करने में मदद कर सकती है और यह पूरे शरीर की मांसपेशियों को मजबूती प्रदान करने में सहायक है. इस एक्सरसाइज से शरीर का ब्लड सर्कुलेशन बेहतर रहता है और इससे शरीर में लचीलापन आता है. यह एक्सरसाइज मोटापे से छुटकारा दिलाने में भी सहायक है. इस एक्सरसाइज से स्टेमिना बढ़ाने में भी काफी मदद मिलती है. शरीर के संतुलन को बेहतर बनाने में भी यह एक्सरसाइज काफी मददगार है.

hillviewsamachar@gmail.com

हिलव्यू समाचार

03

जयपुर >>सोमवार, 14 फरवरी, 2022

रीट मामले की सीबीआई जाँच को लेकर विधानसभा में घमासान

कार्यालय संवाददाता

जयपुर। रीट पेपर लीक मामले की सीबीआई जांच को लेकर आज तीसरे दिन भी विधानसभा में घमासान रहा है. सदन की कार्यवाही हंगामे के बीच ही संपन्न हुई. स्पीकर ने गतिरोध खत्म करने के लिए पक्ष-विपक्ष के सदस्यों को अपने चैंबर में बुलाया लेकिन बात नतीजे तक नहीं पहुंच सकी।

विधानसभा में आज लगातार तीसरे दिन भी रीट पेपर लीक मामले की सीबीआई जांच की मांग को लेकर हंगामा बरपा रहा. सदन की कार्यवाही शुरू होने के साथ ही विपक्ष के सदस्य वेल में आकर नारेबाजी करने लगे. प्रश्नकाल के दौरान आज भी भाजपा विधायकों ने अपने सवाल नहीं पूछे लेकिन आसन से स्पीकर ने उन सवालों पर भी मंत्रियों का जवाब दिलाया. प्रश्नकाल की पूरी कार्यवाही हंगामे के बीच चली तो वहीं शून्यकाल की शुरुआत भी हंगामे के साथ ही हुई. विपक्ष के विरोध के दौरान वो चार विधायक भी सदन के अंदर ही रहे, जिन्हें कल पूरे सत्र के लिए निलंबित कर दिया गया था. स्पीकर डॉ. सीपी जोशी ने विपक्ष के इस रवैये पर कड़ी नाराजगी जाहिर करते हुए कहा यह अच्छे पार्लियामेंट्रीयन की निशानी नहीं है. आप जो परंपरा बना रहे हैं, उसका इतिहास लिखा जाएगा और संसदीय परंपराओं को तोड़ने का श्रेय आपको जाएगा. स्पीकर ने कहा कि आप संसदीय लोकतंत्र की हत्या कर रहे हैं. आप विरोध करिए, सरकार अपनी बात कहेगी और जनता निर्णय करेगी लेकिन यह हाउस हंगामा करने के लिए नहीं है बल्कि जनता के मुद्दों पर डिस्कस करने के लिए है. स्पीकर ने यह भी कहा कि जिन चार सदस्यों को निलंबित किया गया है. उन्हें अंदर लाने का अधिकार आपको नहीं है।

इस दौरान पक्ष-विपक्ष में नोंक-झोंक भी देखने को मिली. नेता प्रतिपक्ष गुलाबचंद कटारिया ने कहा कि केवल विपक्ष के सदस्यों पर कार्यवाही की गई जबकि कल सत्ता पक्ष के सदस्यों का व्यवहार भी उचित नहीं था. रीट पेपर लीक मामले पर नेता प्रतिपक्ष ने कहा कि पेपर मेरे समय में भी आउट हुए थे यह बात स्वीकार करने में कोई हर्ज नहीं है लेकिन राजस्थान में माफिया गैंग तैयार हो गए है जो कोचिंग संस्थानों के साथ मिलीभगत कर इस तरह की घटनाएं कर रहे हैं. नेता प्रतिपक्ष ने सवाल उठाया कि शिक्षा संकुल ही ऐसी जगह क्यों थी, जहां पर राजीव गांधी स्टडी सर्किल के नामजद लोगों को नियुक्त किया गया. वहां एक से एक घटिया लोगों को लगाया गया, जिन्हें पहले भी ऐसी कारगुजारियों में पकड़ा गया? जब बाड़ ही खेत को खा जाएगी तो क्या होगा?

नेता प्रतिपक्ष ने कहा कि जिम्मेदारी केवल उन लोगों की नहीं है जिन्होंने पेपर लीक किया बल्कि जिम्मेदारी उन लोगों की भी है जिन्होंने ऐसे लोगों को लगाया. इन्हें लगाने वाले मंत्री और उच्च स्तर के लोग हैं जिनसे एसओजी के अशोक राठौड़ बुलाकर पूछताछ नहीं कर सकते हैं. यह लाखों बच्चों के भविष्य से जुड़ा सवाल है जिसे समझना पड़ेगा. इस पर मंत्री शांति धारीवाल ने पलटवार करते हुए कहा कि हम मामले पर डिस्कशन करने के लिए तैयार है. आप हमारा जवाब सुनिए. हम एक-एक कर आपके भी कारनामे बताएंगे. धारीवाल ने कहा कि भाजपा दिल्ली के इशारे पर राजनीतिक रूप से विरोध कर रही है. उन्होंने कहा कि यह इसलिए विलंब करना चाहते हैं ताकि भर्तियां नहीं हो सके।

सत्ता पक्ष और विपक्ष की बात सुनने के बाद स्पीकर डॉ. सीपी जोशी ने कहा कि भविष्य में इस तरह की घटनाएं नहीं हो, इस पर हमें मिल बैठकर चर्चा करनी चाहिए. स्पीकर ने नेता प्रतिपक्ष गुलाबचंद कटारिया, उपनेता प्रतिपक्ष राजेंद्र राठौड़, संसदीय कार्यमंत्री शांति धारीवाल और मुख्य सचेतक डॉ. महेश जोशी को अपने चैंबर में चर्चा के लिए आमंत्रित किया लेकिन उपनेता प्रतिपक्ष राजेंद्र राठौड़ ने कहा कि पहले चारों विधायकों का निलंबन रद्द किया जाए, उसके बाद हम बहस को तैयार हैं लेकिन बहस होगी तो रीट से ही शुरू होगी क्योंकि मुख्य मुद्दा यही है. स्पीकर ने शून्यकाल के बाद निलंबन के मामले पर चर्चा की बात कही, जिसे विपक्ष ने अस्वीकार कर दिया. आखिर सदन की कार्यवाही 1 घंटे के लिए स्थगित कर दी गई।

निलम्बित बीजेपी विधायकों का विधानसभा के बाहर धरना

रीट का पेपर कहां मिलेगा... नाथी तेरे बाड़े में, सीबीआई जांच तक करेंगे संघर्ष

जयपुर। भाजपा के विधायक रामलाल शर्मा, मदन दिलावर, चंद्रभान सिंह आक्या और अविनाश गहलोत ने निलम्बन के विरोध और रीट की सीबीआई जांच की मांग पर विधानसभा के गेट पर धरना दिया। चारों विधायकों ने नारे लगाए, रीट का पेपर कहां मिलेगा, नाथी तेरे बाड़े में. विधायकों ने कहा कि चाहे सरकार 4 विधायकों को निलम्बित करे या 40 विधायकों को निलम्बित कर दे। बीजेपी का संघर्ष सीबीआई जांच तक जारी रहेगा। बीजेपी विधायकों ने कहा कि रीट मामला 26 लाख युवाओं और 1 करोड़ लोगों से जुड़ा है। यह प्रदेश और देश का सबसे बड़ा मुद्दा है। बीजेपी पार्टी का फैसला है कि इस मुद्दे पर सीबीआई जांच से कम कुछ भी मंजूर नहीं है। बीजेपी विधायक दल की बैठक में भी यह फैसला लिया गया है कि आंदोलन लगातार जारी रहेगा। निलम्बन वापस नहीं लेने पर विधायक मदन दिलावर ने कहा सरकार हठधर्मिता अपनाए हुए है। बड़े-बड़े मगरमच्छ बाहर घूम रहे हैं । रीट पेपर लीक मामले में सरकार के मंत्री और मुख्यमंत्री शामिल हैं,तो उनकी जांच होनी चाहिए। दिलावर ने कहा राजीव गांधी स्टडी सर्किल के मुख्यमंत्री पदाधिकारी हैं।इसलिए जांच जरूरी है।

विधायक रामलाल शर्मा ने कहा वह चाहते हैं विधानसभा में उनके क्षेत्र की समस्याओं से जुड़े मुद्दे उठें। लेकिन रीट भी विधानसभा क्षेत्र के हजारों युवाओं से जुड़ा मामला है। जब तक उन युवाओं के साथ न्याय नहीं होगा संघर्ष जारी रहेगा। अगर सरकार हमें निलम्बित कर दबाव में लेकर यह सोचे कि निलम्बन को निरस्त कर देंगे तो हम सदन की कार्यवाही ठीक से शुरू करने देंगे। यह कतई नहीं होगा।

विधायक चन्द्रभान सिंह आक्या ने विधानसभा के बाहर धरना देने पर कहा कि कांग्रेस पार्टी पूरे देश में खत्म हो गई। आने वाले समय में तानाशाही की वजह से राजस्थान में भी खत्म हो जाएगी। बीजेपी ने जो सीबीआई जांच का मुद्दा उठाया है यह लाखों युवाओं का मुद्दा है। यह पूरे देश और राजस्थान का मुद्दा है। इसकी जांच होनी चाहिए, दूध का दूध पानी का पानी होना चाहिए। चाहे कोई मंत्री हो या मुख्यमंत्री हो कोई नहीं बचे।

महिला विधायकों के सामने गालियाँ बकने से नाराज़गी

अविनाश गहलोत ने कहा गुरूवार को मंत्री प्रताप सिंह खाचरियावास के साथ विधायक राजकुमार शर्मा, गोविंद सिंह डोटासरा और दूसरे विधायकों ने भद्दी गालियां महिला विधायकों के सामने बकीं। ये राजस्थान सरकार की दोहरी राजनीति को दर्शाता है। एक तरफ बीजेपी विधायकों की वाजिब मांगों को दबाने की कोशिश की जा रही है। दूसरी तरफ सरकार के मंत्री अश्लील गालियां सदन में बक रहे हैं। जब तक सीबीआई जांच नहीं होगी। पार्टी निर्देश पर हमारा संघर्ष जारी रहेगा। अगर हमने गुनाह किया है, तो ऐसा गुनाह हम हजार बार करेंगे। यह युवाओं की बात है। लेकिन सरकार गलतफहमी में है। जब-जब युवाओं ने कमान सम्भाली है, उस वक्त फैसला हुआ है। यह राजस्थान सरकार के ताबूत में आखिरी कील साबित होगा।

राजस्थान विधानसभा पहुँचे दूल्हा-दुल्हन

कार्यालय संवाददाता

जयपुर। राजस्थान विधानसभा में शुक्रवार को एक रोचक वाकया तब घटित हुआ जब नव विवाहित दूल्हा-दुल्हन ने विधानसभा परिसर में प्रवेश करने की कोशिश की। इसे देख विधानसभा के गेट पर तैनात सुरक्षा कर्मियों ने अंदर प्रवेश से रोक दिया। दूल्हा-दुल्हन से पूछताछ की गई तो पता चला कि विधानसभा के पीछे लालकोठी क्षेत्र में रहने वाले निर्मल कुमावत इना को दुल्हन बनाकर लाये हैं। पुरानी परम्परा व रीति रिवाज के अनुसार इस समाज के लोग सबसे पहले अपने इष्ट देवता के जोड़े के साथ धोक लगाते हैं। देवता का मंदिर जो अब विधानसभा के अंदर हैं। वर्तमान में विधानसभा का बजट सत्र चल रहा है। ऐसे में कड़े सुरक्षा बंदोबस्त किए हुए हैं। हालांकि करीब आधा घंटे की काफी हिल हुज्जत के बाद बड़े अधिकारियों से पूछ दूल्हा-दुल्हन के साथ परिजनों को देवता धोकने की अनुमति दे दी गई।

आईसीएआई सीए फाइनल में झुंझुनूं के मुकुंदगढ़ की राधिका बेरीवाला ने पूरे भारत में टॉप किया है

राजस्थान की बेटी किया ऑल इंडिया टॉप

कार्यालय संवाददाता

झुंझुनूं। राजस्थान के झुंझुनूं के मुकुंदगढ़ के रहने वाले बेरीवाला परिवार की बेटी राधिका बेरीवाला ने आज घोषित सीए फाइनल के परीक्षा परिणाम में पूरे भारत में टॉप किया है. फिलहाल परिवार सूरत में रहता है, लेकिन टॉपर राधिका बेरीवाला परिवार की एक शादी में हिस्सा लेने के लिए झुंझुनूं ही आई है. जहां पर खुशी का माहौल देखने को मिला. राधिका ने परिवार के सदस्यों के साथ केक काटकर टॉपर होने की खुशी मनाई और जमकर सेलिब्रेशन किया. उन्होंने बताया कि हर परीक्षा में अपना शत–प्रतिशत देने की कोशिश की है. यही कारण है कि सीपीटी में उन्होंने 200 में से 195 अंक प्राप्त किए. वहीं इंटर मीडियट में वे ऑल इंडिया पर सैकंड थी. वे फाइनल में इंडिया को टॉप करेगी. यह नहीं सोचा था. वे आगे टॉप कॉलेज से एमबीए करना चाहती है. वहीं उन्होंने अपनी सफलता का श्रेय अपने परिवार के अलावा कोचिंग टीचर डॉ. रवि छावछरिया तथा सीए सुरेश को दिया है. सीए का सलेबस टफ नहीं है, लेकिन लैंदी जरूर है. रिविजन ही वो की है, जिससे सफलता प्राप्त की जा सकती है. राधिका के पिता चौथमल बेरीवाला और मां आशा बेरीवाला ने बताया कि उन्हें यकीन था कि उनकी बेटी टॉप थ्री में आएगी. यही कारण है कि आज सुबह ही पिता चौथमल ने परिवार के लोगों को बोल दिया था कि राधिका का फोन फ्री रखना. चेयरमैन का फोन आएगा. आखिरकार वो आ भी गया.चौथमल खुद भी राजस्थान बोर्ड के टॉपर रह चुके हैं. वे 10वीं में स्टेट मेरिट में सातवें तथा 12वीं कॉमर्स में स्टेट मेरिट में चौथे स्थान पर था. उनका सपना था कि वे आईएएस बने, लेकिन वे बन नहीं पाए. शौकिया तौर पर आरएएस-2006 परीक्षा दी. पास हो गए, लेकिन उन्हें मनमाफिक रैंक नहीं मिली. इसलिए उन्होंने नौकरी एक साल करने के बाद छोड़ दी और सूरत में परिवार के साथ बिजनस करने लगे. चौथमल ने बताया कि उन्होंने भी बेटी पर कभी अपने सपनों को नहीं थोपा. बेटी ने जो करना चाहा है, उसका साथ दिया. सीए परीक्षा में भी राधिका के माता–पिता ने रातभर जगकर बेटी की पढ़ाई का ख्याल किया है।

ये नियुक्तियाँ बहुत महत्वपूर्ण हैं, गाड़ी-घोड़े लेने से काम नहीं चलेगा: गोविंद सिंह डोटासरा

राजनितिक नियुक्तियाँ मिलने के बाद आज कांग्रेस के नेताओं ने मुख्यमंत्री अशोक गहलोत और प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष से मुलाकात कर आभार व्यक्त किया

कार्यालय संवाददाता

जयपुर। राजनितिक नियुक्तियां मिलने के बाद कांग्रेस के नेताओं ने मुख्यमंत्री अशोक गहलोत और प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष से मुलाकात कर उनका आभार व्यक्त किया. मुख्यमंत्री आवास पर आयोजित हाईटी कार्यक्रम में मुख्यमंत्री गहलोत ने सभी नेताओं को बधाई देते हुए कहा कि आपको सभी की सहमति और आपकी योग्यता के अनुसार जिम्मेदारियां दी गईं हैं. इधर प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष गोविंद सिंह डोटासरा ने मौजूद नेताओं को नसीहत देते हुए कहा कि ये नियुक्तियां बहुत महत्वपूर्ण हैं, लेकिन गाड़ी-घोड़े लेने से काम नहीं चलेगा।

सीएम अशोक गहलोत ने राजनीति नियुक्तियां पाने वाले नेताओं को संबोधित करते हुए कहा कि जनता के बीच आपको अपनी सक्रियता बनाए रखनी है. मिशन 2023 के लिए आपकी भूमिका बहुत महत्वपूर्ण है. ऐसे में आप सभी नेता अपने-अपने विभागों के कामकाज के साथ साथ प्रदेश के एक एक जिले की जिम्मेदारी ले लें ताकि सत्ता और संगठन के तालमेल के साथ जनता के बीच आपकी उपस्थिति मजबूत रहे. जिले में सरकार की योजनाओं का प्रचार-प्रसार करें. कार्यकर्ताओं से मुलाकात करें. संगठन के लिए काम करें।

डोटासरा ने उपस्थित सभी नेताओं को नसीहत देते हुए कहा कि आपको जनता के काम करने होंगे.जनता के बीच मौजूद रहना होगा. विधानसभा चुनाव में 2 साल का वक्त है. ऐसे में आपको तुरंत एक्शन में आना होगा ताकि राजस्थान में सरकार बनने का मिथक तोड़ा जा सके और कांग्रेस फिर से अपनी सरकार राजस्थान में बनाने में कामयाब रहे।

राजनीति में किसी भी नेता के लिए पनघट की राह कितनी मुश्किल होती है इसका एक उदाहरण देते हुए उन्होंने सरकार ने खुद से जुड़ा हुआ किस्सा सुनाया. कहा किसी भी नेता के लिए आलाकमान सर्वोपरि होता है. उसका आदेश सर माथे होना चाहिए. मैं मुख्यमंत्री अशोक गहलोत के साथ दौरे पर था. दौरे से लौटने के दौरान हेलीकॉप्टर में बैठने से पहले मेरे पास दिल्ली से इस्तीफ़ा देने के लिए फ़ोन आया. मैंने तुरंत इस्तीफ़ा टाइप करवाया और जयपुर पहुंचने से पहले इस्तीफ़ा मंजूर हो चुका था।

एयरपोर्ट से बाहर निकलकर प्रभारी अजय माकन ने 1 व्यक्ति 1 पद के सिद्धांत केअनुरूप मेरे और दो अन्य मंत्रियों के इस्तीफों की घोषणा कर दी थी. तो आप ये मानकर चलिए कि आपको जो ज़िम्मेदारी आला कमान ने दी है वो जनता की सेवा के लिए है. इस तरह के पद स्थायी नहीं होते, लेकिन जनता के बीच अगर आप हमेशा स्थाई बने रहेंगे।

मुख्यमंत्री आवास पर हुए इस कार्यक्रम में आज एक दिलचस्प तस्वीर भी देखने को मिली. मुख्यमंत्री के साथ मंच पर गोविंद सिंह डोटासरा के अलावा रामेश्वर डूडी और पूर्व अध्यक्ष डॉ. चन्द्रभान भी मौजूद रहे. रामेश्वर डूडी की मुख्यमंत्री अशोक गहलोत के साथ लंबे समय के बाद मुलाक़ात हुई. दोनों नेताओं ने गर्मजोशी से एक दूसरे से मुलाक़ात की. मुख्यमंत्री ने रामेश्वर डूडी को उनकी नियुक्ति के लिए बधाई दी तो डूडी ने भी मुख्यमंत्री का आभार व्यक्त किया।

प्रश्नकाल

बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ योजना में केन्द्र सरकार द्वारा समय पर नहीं होता है राज्य को राशि का आवंटन

कार्यालय संवाददाता

जयपुर। महिला एवं बाल विकास मंत्री ममता भूपेश ने शुक्रवार को विधानसभा में कहा कि बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ योजना के अर्न्तगत केन्द्र सरकार द्वारा प्रदेश को राशि का आवंटन समय पर नहीं होता है। उन्होंने कहा कि केन्द्र सरकार की योजना के नीति- निर्धारण में कमी के कारण बच्चियों को योजना का वास्तविक लाभ समय पर नहीं मिल पाता।

भूपेश प्रश्नकाल में विधायकों द्वारा इस सम्बन्ध में पूछे गए पूरक प्रश्नों का जवाब दे रही थी। उन्होंने कहा कि बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ योजना के अर्न्तगत केन्द्र सरकार द्वारा राज्य सरकार को 50 लाख रुपये की राशि का आवंटन एक वर्ष में दो चरणों में किया जाता है। प्रथम चरण में अप्रेल से सितंबर तक 25 लाख तथा द्वितीय चरण अक्टूबर से मार्च माह तक 25 लाख रुपये का आवंटन किया जाता है। उन्होंने बताया कि गत सरकार को वर्ष 2015 से वर्ष 2018 के बीच में 12 करोड़ रूपये केन्द्र सरकार से प्राप्त हुए थे, उसमें से मात्र 28 प्रतिशत खर्च गत सरकार द्वारा किया गया था। उन्होंने बताया कि वर्तमान सरकार को वर्ष 2019 से वर्ष 2021 तक 11 करोड़ रुपये केन्द्र सरकार से योजनान्तर्गत प्राप्त हुए थे और कोरोना काल के बावजूद हमारी सरकार द्वारा अब तक 45 प्रतिशत राशि योजना में व्यय किया जा चुका है।

भूपेश ने बताया कि योजना में केन्द्र सरकार राज्य सरकार को समय पर राशि का आंवटन नहीं करती है तथा फरवरी में द्वितीय किश्त आनी थी, लेकिन अभी तक 22 जिलों में पहली किश्त ही आई है। उन्होंने कहा कि योजना के वास्तविक लाभ के लिए केन्द्र सरकार को राशि आवंटन में देरी करने की नीति में परिवर्तन करना चाहिए।

इससे पहले भूपेश ने विधायक अनिता भदेल के मूल प्रश्न के लिखित जवाब में बताया कि बेटी बचाओं बेटी पढाओं योजनान्तर्गत वर्ष 2019, वर्ष 2020 एवं वर्ष 2021 में आवंटित राशि की जानकारी देते हुए बताया कि वर्ष 2019-20 में जिलों के लिए 8 करोड 86 लाख 61 हजार रुपये प्राप्त हुए थे उसमें से राज्य सरकार द्वारा 4 करोड 36 लाख 37 हजार रुपये व्यय किए गए। इसी प्रकार वर्ष 2020-21 में जिलों के लिए प्राप्त राशि 8 करोड 45 लाख 41 हजार रुपये में से 5 करोड 25 लाख 67 हजार रुपये व्यय किया गया।

उन्होंने बताया कि वर्ष 2021-22 जिलों के लिए प्राप्त राशि 6 करोड 94 लाख 60 हजार में से 2 करोड 28 लाख 35 हजार रु(31 जनवरी 2022 तक) व्यय किए गए। उन्होंने जिलेवार आवंटित राशि व व्यय का विवरण सदन के पटल पर रखा। उन्होंने बताया कि वर्तमान में योजनान्तर्गत ब्लॉक टास्क फोर्स , जिला एवं राज्य टास्क फोर्स की नियमित बैठकें आयोजित की जा रही हैं। योजना की निगरानी हेतु राज्य स्तर से भी समय-समय पर दिशा-निर्देश प्रदान किये जा रहे हैं।

hillviewsamachar@gmail.com

हिलव्यू समाचार

04

जयपुर >>सोमवार, 14 फरवरी, 2022

महिला सशक्तिकरण

डॉ. माधवी बोरसे, रावतभाटा

महिला सशक्तिकरण तब है जब महिलाओं को अपने निर्णय लेने की स्वतंत्रता हो। उनके लिए क्या सही है और उनके लिए क्या गलत है, यह तय करने में उन्हें पूरा अधिकार हो। महिलाओं को दशकों से पीड़ित होना पड़ा है क्योंकि उनके पास कोई अधिकार नहीं थे और अब भी बहुत सी जगह, गांव, यहां तक की बहुत से शहर और देश में भी नहीं है!

महिलाओं को उनके अधिकारों के प्रति जागरूक किया गया और अब भी किया जा रहा है । अपने अधिकारों के साथ-साथ महिलाओं को सिखाया गया कि वे अपने जीवन के सभी पहलुओं में आत्मनिर्भर कैसे हों। उन्हें सिखाया गया कि उनके लिए एक स्थान कैसे बनाया जाए जहां वे बढ़ सकें और वह बन सकें जो वे बनना चाहती हैं। पुरुषों के पास हमेशा सभी अधिकार होते थे। हालाँकि, महिलाओं को इनमें से कोई भी अधिकार नहीं था, यहाँ तक कि मतदान जैसा छोटा अधिकार भी। चीजें बदल गईं जब महिलाओं ने महसूस किया कि उन्हें भी समान अधिकारों की आवश्यकता है। यह अपने अधिकारों की मांग करने वाली महिलाओं द्वारा क्रांति के साथ लाया गया।

दुनिया भर के देशों ने खुद को 'प्रगतिशील देश' कहा, लेकिन उनमें से हर एक के पास महिलाओं के साथ गलत व्यवहार करने का इतिहास है। इन देशों में महिलाओं को आज़ादी और दर्ज़ा हासिल करने के लिए उन प्रणालियों के खिलाफ़ लड़ना पड़ा, जो उन्होंने आज हासिल की हैं। हालाँकि, भारत में, महिला सशक्तिकरण अभी भी पिछड़ रहा है। अब भी जागरूकता फैलाने की बहुत अधिक आवश्यकता है।

उन देशों में से एक है जो महिलाओं के लिए सुरक्षित नहीं है और इसके कई कारण हैं। उनकी सुरक्षा में कमी का एक कारण ऑनर किलिंग का ख़तरा भी है। परिवारों को लगता है कि अगर वे परिवार और परिवार की प्रतिष्ठा के लिए शर्म की बात है, तो उन्हें उनकी हत्या करने का अधिकार है।

महिलाओं के सामने एक और बड़ी समस्या यह है कि शिक्षा की कमी है। देश में उच्च शिक्षा हासिल करने के लिए महिलाओं को हतोत्साहित किया जाता है। इसके साथ ही उनकी शादी जल्दी हो जाती है। महिलाओं पर हावी पुरुषों को लगता है कि महिलाओं की भूमिका उनके लिए काम करने तक सीमित है। वे इन महिलाओं को कहीं जाने नहीं देते हैं, नौकरी नहीं करने देते हैं, और इन महिलाओं को कोई स्वतंत्रता नहीं है।

महिला सशक्तीकरण लैंगिक समानता प्राप्त करने का एक महत्वपूर्ण पहलू है। इसमें एक महिला के आत्म-मूल्य, उसकी निर्णय लेने की शक्ति, अवसरों और संसाधनों तक उसकी पहुंच, उसकी शक्ति और घर के अंदर और बाहर अपने स्वयं के जीवन पर नियंत्रण और परिवर्तन को प्रभावित करने की उसकी क्षमता को बढ़ाना शामिल है। फिर भी लैंगिक मुद्दे केवल महिलाओं पर केंद्रित नहीं हैं, बल्कि समाज में पुरुषों और महिलाओं के बीच संबंधों पर हैं। पुरुषों और लड़कों के कार्य और दृष्टिकोण लैंगिक समानता प्राप्त करने में एक आवश्यक भूमिका निभाते हैं। यदि महिलाएं घरेलू हिंसा और दुर्व्यवहार से गुज़र रही हैं, तो वे इसकी सूचना किसी को नहीं देती हैं। उसका एक सबसे बड़ा कारण यह है कि वे जिस समाज में रहती हैं, उसके बारे में टिप्पणी करेंगे।

भारत एक ऐसा देश है जिसमें महिला सशक्तिकरण का अभाव है।देश में बाल विवाह का प्रचलन है। माता-पिता को अपनी बेटियों को यह सिखाना चाहिए कि अगर वे अपमानजनक रिश्ते में हैं, तो उन्हें घर आना चाहिए। इससे, महिलाओं को ऐसा लगेगा कि उन्हें अपने माता-पिता का समर्थन प्राप्त है और वे घरेलू हिंसा से बाहर निकल सकती हैं।

महिलाओं को उन चीजों मै आगे बढ़ने के लिए स्वतंत्र होना चाहिए की वे अपने सभी लक्ष्यों और आकांक्षाओं को प्राप्त कर सके जो वो करना चाहती है।

आज भी विश्व स्तर पर, महिलाओं के पास पुरुषों की तुलना में आर्थिक भागीदारी के लिए कम अवसर हैं, बुनियादी और उच्च शिक्षा तक कम पहुँच, अधिक स्वास्थ्य और सुरक्षा जोखिम, और कम राजनीतिक प्रतिनिधित्व।

महिलाओं के अधिकारों की गारंटी देना और उन्हें अपनी पूरी क्षमता तक पहुंचने के अवसर प्रदान करना न केवल लैंगिक समानता प्राप्त करने के लिए महत्वपूर्ण है, बल्कि अंतर्राष्ट्रीय विकास लक्ष्यों की एक विस्तृत श्रृंखला को पूरा करने के लिए भी महत्वपूर्ण है। सशक्त महिलाएं और लड़कियां अपने परिवार, समुदायों और देशों के स्वास्थ्य और उत्पादकता में योगदान करती हैं, जिससे सभी को लाभ होता है।

लिंग शब्द सामाजिक रूप से निर्मित भूमिकाओं और ज़िम्मेदारियों का वर्णन करता है जो समाज पुरुषों और महिलाओं के लिए उपयुक्त मानते हैं। लिंग समानता का अर्थ है कि पुरुषों और महिलाओं को वित्तीय स्वतंत्रता, शिक्षा और व्यक्तिगत विकास के लिए समान शक्ति और समान अवसर प्राप्त हैं।

अब भी बहुत से विकासशील देशों में लगभग एक चौथाई लड़कियां स्कूल नहीं जाती हैं। आमतौर पर, सीमित साधनों वाले परिवार जो अपने सभी बच्चों के लिए स्कूल की फीस, वर्दी और आपूर्ति जैसे खर्च नहीं कर सकते, वे अपने बेटों के लिए शिक्षा को प्राथमिकता देंगे।

एक शिक्षित लड़की की शादी को स्थगित करने, छोटे परिवार को बढ़ाने, स्वस्थ बच्चे पैदा करने और अपने बच्चों को स्कूल भेजने की अधिक संभावना है। उसके पास आय अर्जित करने और राजनीतिक प्रक्रियाओं में भाग लेने के अधिक अवसर हैं, और एचआईवी, करोना अन्य बीमारियों से संक्रमित होने की संभावना कम है।

महिलाओं का स्वास्थ्य और सुरक्षा एक अन्य महत्वपूर्ण क्षेत्र है। एचआईवी / एड्स महिलाओं के लिए एक तेजी से प्रभावी मुद्दा बनता जा रहा है। मातृ स्वास्थ्य भी विशिष्ट चिंता का एक मुद्दा है। कई देशों में, महिलाओं की प्रसव पूर्व और शिशु देखभाल तक सीमित पहुंच है, और गर्भावस्था और प्रसव के दौरान जटिलताओं का अनुभव होने की अधिक संभावना है। यह उन देशों में एक महत्वपूर्ण चिंता का विषय है जहाँ लड़कियाँ शादी करती हैं और उनके तैयार होने से पहले बच्चे होते हैं; 18 वर्ष की आयु से पहले। शिक्षा, मातृ स्वास्थ्य, देखभाल, सूचना और सेवाओं के लिए एक महत्वपूर्ण प्रवेश बिंदु प्रदान कर सकती है जो माताओं को अपने स्वयं के स्वास्थ्य और अपने बच्चों के स्वास्थ्य के बारे में सूचित निर्णय लेने वालों के रूप में सशक्त बनाती है। हमें एक ऐसी संस्कृति में रहने की ज़रूरत है जो सम्मान के साथ देखती है और महिलाओं को पुरुषों के जितना ही आदर्श बनाती है।

लैंगिक समानता प्राप्त करने में ध्यान केंद्रित करने का एक अंतिम क्षेत्र महिलाओं का आर्थिक और राजनीतिक सशक्तिकरण है। हालांकि महिलाओं में दुनिया की 50% से अधिक आबादी शामिल है, लेकिन उनके पास दुनिया की संपत्ति का केवल 1% ही है। दुनिया भर में, महिलाएं और लड़कियां लंबे समय तक अवैतनिक घरेलू काम करती हैं। कुछ स्थानों पर, महिलाओं को अभी भी खुद की जमीन या संपत्ति का अधिकार प्राप्त करने, ऋण प्राप्त करने, आय प्राप्त करने या नौकरी के भेदभाव से मुक्त अपने कार्यस्थल में स्थानांतरित करने का अधिकार नहीं है। घर और सार्वजनिक क्षेत्र में सभी स्तरों पर, महिलाओं को निर्णय निर्माताओं के रूप में व्यापक रूप से रेखांकित किया जाता है। दुनिया भर की विधानसभाओं में, महिलाओं को 4 से 1 तक पछाड़ दिया जाता है, फिर भी लैंगिक समानता और वास्तविक लोकतंत्र प्राप्त करने के लिए महिलाओं के लिए राजनीतिक भागीदारी महत्वपूर्ण है। वेतन एक और क्षेत्र है जो महिलाओं और पुरुषों के लिए समान होना चाहिए। महिलाओं को उस काम के लिए समान रूप से भुगतान किया जाना चाहिए जो वे करते हैं।

महिला सशक्तिकरण एक महत्वपूर्ण चीज है जिसे पूरा करने की जरूरत है। आज महिलाओं के पास जो अधिकार और स्वतंत्रता है, वह उन झगड़ों का परिणाम है, जिनके खिलाफ सशक्त महिलाओं ने लड़ाई लड़ी। इन सशक्त महिलाओं के कृत्यों से पता चलता है कि यह समय है कि महिलाएं भी सभी स्वतंत्रता और अधिकारों का आनंद ले सकती हैं।

महिलाओं को अपने हक के लिए आवाज़ खोजने की ज़रूरत नहीं है, उनके पास एक आवाज़ है, आत्मविश्वास है, और उन्हें इसका उपयोग करने के लिए सशक्त महसूस करने की आवश्यकता है, और लोगों को सुनने के लिए प्रोत्साहित करने की आवश्यकता है।

कविता

आँख में आँसू आया है...

डॉ. अलका अग्रवाल
जयपुर

जब-जब घाव दिया अपनों ने,
जब-जब वार किया अपनों ने,
मैने मन को, समझाया है।
पर,आँख में आँसू आया है ।
ग़ैरों से शिकायत कोई नहीं,
वे ग़ैर हैं, अपना खून नहीं ।
शिकवा क्या ,वह तो पराया है ।
पर, आँख में आँसू आया है ।
जीवन अपना कभी न माना,
हर पल जिनके लिए ही जाना।
उनको भी न, अपना पाया है।
पर, आँख में आँसू आया है।
प्रतिपल जिनको प्यार किया था,
निज- जीवन को वार दिया था ।
क्या कहूँ, कहर जो ढाया है?
पर, आँख में आँसू आया है।

श्रद्धांजलि लता को

धार स्वर में मधुर भारत की लता
वाग्देवी माँ सी भारत की लता
चूमते तारे गगन है चूमता
चांद चमके नभ में भारत की लता
भाव मीठे मन जगाती है नमन
लाडली जन जन की भारत की लता
भेंट वीणापाणि माँ हमको मिली
कोकिला कण्ठी सी भारत की लता
ज्योति उनको प्यार करती यूं नहीं
नेक दिल इंसान भारत की लता।।

ज्योत्सना सक्सेना

कामुकता ही कामयाबी का मापदंड

भावना ठाकर 'भावु'
बेंगलूरु, कर्नाटक

पहले के ज़माने में शादीशुदा स्त्री के कुछ दायरे और बहू के औधे की गरिमा हुआ करती थी। किसी खानदान की इज्जत और शाख होती है बहूएं। ससुराल वाले कितने भी मार्डन क्यूँ न हो, अपने घर की लक्ष्मी को पूरी दुनिया के सामने गैर मर्द के साथ हर सीमाएं पार करते कामुक हरकतें करते हुए कैसे देख सकते है। भले ही उनके प्रोफ़ेशन का हिस्सा हो। आज के आधुनिक ज़माने में कुछ लोगों को ऐसी बातें दकियानुसी और पुराने ख़यालात वाली लग सकती है। पर क्या हम खुद अपने घर की बहू बेटियों को ऐसी हालत में देख सकते है। कई हीरोइनों ने शादी के बाद क्षेत्र सन्यास ले लिया है। कहने का मतलब ये नहीं की शादी के बाद काम छोड़ दो, पर आप किसी के घर की मर्यादा हो इज्ज़त हो इस बात को याद रखकर एक सीमा तय करते काम करना चाहिए।

दीपिका पादुकोण की फ़िल्म गहराईयां इन दिनों चर्चा में है। प्रमोशन से तो पता चलता है की रिश्तों के ताने-बाने को दर्शाती ये फ़िल्म बहुत बढ़िया होगी। कहानी में सच्चाई की झलक दिखाई देती है। इस फिल्म में इंसान के आपसी रिश्ते की उलझनों के साथ-साथ किसी से प्यार करने पर दिल में होने वाली रोमांचक अनुभूति, अपने वजूद की तलाश करने और अपनी मंज़िल ढूंढने जैसी बातों को भी बखुबी दिखाया गया है। जब फ़िल्म इतनी सुंदर बनी हो तब आपको खुद पर विश्वास होना चाहिए की बिना अश्लीलता और सेक्स ड़ाले भी फ़िल्म सुपर हिट साबित होगी। ज़रूरी नहीं नंगेपन और कामुकता का तड़का लगाया जाए। पर उफ्फ़ ये फ़िल्में और फ़िल्मी लोग, भारतीय संस्कृति से कोसों दूर होते जा रहे है। आधुनिकता और अश्लीलता अपने झंडे गाड़ रही है। पैसों के आगे अपनी गरिमा बेच रही है आजकल की हीरोइनें। क्या डायरेक्टर को ऐसे कामुक सीन के लिए मना नहीं कर सकतीं हीरोइनें? वैसे एक हीरोइन मना कर भी दे तो दूसरी तैयार ही बैठी होती है। इन सबको अपनी जगह पर बनें रहने की कितनी बड़ी और गंदी कीमत चुकानी पड़ रही है। अपनी अस्मिता खोकर स्टेटस हासिल करने में इनको कोई संकोच नहीं।

सच में दीपिका पादुकोण की अदाकारी पर फ़िदा होते उनके प्रति जो सम्मान था वो नज़रों से गिर चुका है। माना कि ये उनके काम का एक हिस्सा है, पर गहराईयां में फ़िल्म के हीरो के साथ एक गानें में खुलकर उन्मादित होते जो दृश्य दिए है ये देखकर एक प्रश्न होता है कि उनके पति और घरवालों के रिएक्शन कैसे होंगे। कौनसा पति अपनी पत्नी को किसी गैरमर्द के साथ ऐसी

अवस्था में देख पाता होगा। भले ही ऐक्टिंग का हिस्सा ही क्यूँ न हो। और एक शादीशुदा औरत कैसे खुल्लेआम ऐसे सीन करने पर राज़ी हो जाती होगी। आजकल शायद फ़िल्मों की सक्सेस का मापदंड अश्लीलता और अंग प्रदर्शन ही रह गया है। पब्लिसिटी के लिए एक ऐसा गाना बना लो जिसमें सेक्स का तड़का लगा हो, और दर्शकों को ललचाओ। फ़िल्म की कहानी में दम हो न हो सेक्स, गाली और अंग प्रदर्शन करते कामुकता से भरे दृश्यो से फ़िल्म को हीट बनाने का मानों प्रोड्यूसर डायरेक्टर को एक फार्मूला मिल गया है। आज तक बहुत सारी फ़िल्में ऐसी आई जिसमें न अश्लीलता थी, न अंग प्रदर्शन, न गाली गलोच फिर भी सफ़लता की सीमा लाँघ गई और सालों तक चली। मधुबाला, मीना कुमारी, माला सिन्हा, नरगिस और वहिदा रहमान ने पूरी फ़िल्म में साड़ी पहनकर सिर्फ़ अदाकारी के ज़रिए अपना लोहा मनवाया था।

छू लेने दो नाजुक होठों को गाने में बिना छूए भी प्रेम को इतनी सुंदरता से प्रस्तुत किया गया था की सिर्फ़ शब्दों ने ही गानें में जान ड़ाल दी थी।

पति-पत्नी के बीच सेक्स या एक दूसरे के प्रति प्यार जताना चार दिवारी के भीतर होने वाली क्रियाएं होती है। पर पति-पत्नी के अंतरंगी पलों को फ़िल्म वालों ने इतने बेहूदा और दागदार बना दिया है की एक दिन ऐसा आएगा की इंसान देख देखकर ही उब जाएगा। करते वक्त वो उमंग वो फीलिंग्स आएगी ही नहीं जो आनी चाहिए।

गहराईयां में दीपिका और सिद्धांत चतुर्वेदी के बीच हॉट कैमिस्ट्री लगातार चर्चा में है। इस फ़िल्म के गाने बेकाबू में दोनों ने सारी हदों को पार कर लिया है। इस गाने में दीपिका और सिद्धांत के बीच ज़बरदस्त रोमांटिक दृश्यों को दिखाया गया है। दीपिका ने टीजर सोशल मीडिया में शेयर किया, जिस पर फैंस और फॉलोअर्स दिलचस्प कमेंट्स दे रहे हैं। बेकाबू गाना पूरी तरह से दीपिका और सिद्धांत के किरदारों की भावनात्मक इंटेंसिटी के साथ रिश्ते को लेकर असमंजस को दिखाता है। पर तमाम असमंजस के बावजूद दोनों खुद को रोक नहीं पाते। इस पर दीपिका और सिद्धांत की कैमिस्ट्री देख लोगों ने मज़ाक किया कि अब रणवीर का क्या होगा। एक यूजर ने लिखा हो गया डिवोर्स।

दूसरी ओर एक वीडियो में गाड़ी के अंदर 'बेकाबू' हुए गानें पर दीपिका-रणवीर दोनों झूमते हुए नजर आ रहे हैं। वीडियो को शेयर करते हुए रणवीर सिंह ने कैप्शन दिया है, 'सभी बिंदास बच्चे ये कर रहे हैं। इसके साथ उन्होंने कुछ इमोजी भी शेयर की है। दीपिका ने उस वीडियो पर कॉमेंट कर लिखा 'मेरे बिगस्ट चियरलीडर, लव यू'। इसके साथ दीपिका ने एक हार्ट वाली इमोजी भी शेयर की है। पत्नी की अश्लीलियत पर जब पति झूम सकता है, नाच सकता है तो समझ लीजिए ज़माना कहाँ से कहाँ पहुँच गया है। ख़ैर जब मियां बीवी राज़ी तो क्या करेगा काज़ी।

मिशन पर्वतमाला

पर्वतमाला परियोजना पर्यटन उद्योग, रोज़गार, पहाड़ों की मुश्किल भौगोलिक स्थितियों के लिए वरदान साबित होगी

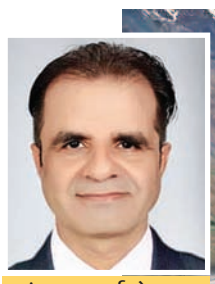

संकलनकर्ता लेखक-
कर विशेषज्ञ एडवोकेट
किशन भावनानी
गोंदिया महाराष्ट्र

भारत तेज़ी के साथ अपने लक्ष्य विज़न 2047 सहित अनेक क्षेत्रों के बुनियादी ढांचे को नए भारत, डिजिटल भारत के अनुसार बनाने, ढांचागत सुधार करने और भारतीय अर्थव्यवस्था को 5 ट्रिलियन डॉलर तक पहुंचाने के लिए अर्थव्यवस्था में जान फूंकने कौशलता विकास कार्यक्रमों, स्टार्टअप, एमएसएमई, डिजिटल कृषि सहित परिवहन क्षेत्र में सबसे बड़ी परियोजनाओं भारतमाला, सागरमाला और अभी बजट 2022 में प्रस्तावित पर्वतमाला परियोजनाओं को शामिल करके बुनियादी परिवहन ढांचे का आधुनिकीकरण कर दुर्गम पहाड़ी इलाकों में परिवहन कनेक्टिविटी से पर्यटन उद्योग और रोज़गार को बढ़ावा देने में मील का पत्थर साबित होगी और वर्तमान प्रस्तावित पर्वतमाला परियोजना से रोपवे के बुनियादी ढांचे संचालित करने वाले प्रमुख कारकों में परिवहन का किफायती मध्यम, तेज माध्यम, पर्यावर अनुकूल, लास्ट माइल कनेक्टिविटी का अधिक लाभ मिलने की पूर्ण संभावना है। साथियों बात अगर हम पर्वतमाला परियोजना को समझने की करें तो इसका अर्थ और पर्यायवाची रज्जुपथ संस्कृत [संज्ञा पुल्लिंग] ऊँची-नीची पहाड़ी जगहों, बड़े-बड़े कल कारखानों आदि में एक स्थान से दूसरे स्थान तक सामान पहुँचाने के लिए बड़े-बड़े खंभों में रस्से बांधकर बनाया गया मार्ग ; रस्से का मार्ग (रोप वे)। आजकल पहाड़ी क्षेत्रों में एक कुशल परिवहन नेटवर्क विकसित करना एक बड़ी चुनौती है। इन क्षेत्रों में रेल और हवाई परिवहन नेटवर्क सीमित हैं, जबकि सड़क नेटवर्क के विकास में तकनीकी चुनौतियां हैं। इस पृष्ठभूमि को देखते हुए क्षेत्र में, रोपवे एक सुविधाजनक और सुरक्षित वैकल्पिक परिवहन साधन के रूप में उभरा है। साथियों बात अगर हम पर्वतमाला परियोजना के लाभ की करें तो, पीआईबी के अनुसार परिवहन का यह माध्यम कठिन क्षेत्रों में रहने वाले लोगों को गतिशीलता प्रदान करेगा और उन्हें मुख्यधारा का हिस्सा बनने में मदद करेगा। ऐसे क्षेत्रों में रहने वाले ग्रामीण/किसान अपनी उपज को अन्य क्षेत्रों में बेच सकेंगे, जिससे उन्हें अपनी आय बढ़ाने में मदद मिलेगी, इसके दूरगामी लाभ इस प्रकार है।

अ) अर्थव्यवस्थाः रोपवे जिसमें एक ही पावर-प्लांट और ड्राइव मैकेनिज्म द्वारा संचालित कई कारें हैं। यह निर्माण और रखरखाव लागत, दोनों को कम करता है। पूरे रोपवे के लिए एक ही ऑपरेटर का उपयोग श्रम लागत में एक और बचत करता है। समतल जमीन पर, रोपवे की लागत नैरो-गेज रेलमार्गों के साथ प्रतिस्पर्धी है और पहाड़ों में रोपवे कहीं बेहतर है।

ब) लचीला-विभिन्न सामग्रियों का परिवहन - एक रोपवे विभिन्न प्रकार की सामग्री का एक साथ परिवहन कर सकता है। क) बड़ी ढलानों को संभालने की क्षमता- रोपवे और केबल-वे (केबल क्रेन) बड़े ढलानों और ऊंचाई में बड़े अंतर को संभाल सकते हैं। जहां किसी सड़क या रेलमार्ग को स्विचबैक या सुरंगों की आवश्यकता होती है, रोपवे सीधे ऊपर और नीचे फॉल लाइन की यात्रा करता है। इंग्लैंड में पुराने क्लिफ रेलवे और पहाड़ों में स्की रिसॉर्ट रोपवे इस सुविधा का लाभ उठाते हैं।

ड) कम जमीन की जरूरत- तथ्य यह है कि अंतराल पर केवल संकरे -आधारित लंबवत समर्थन की आवश्यकता होती है, शेष जमीन को मुक्त छोड़कर, निर्मित क्षेत्रों में और उन जगहों पर जहां भूमि उपयोग के लिए तीव्र प्रतिस्पर्धा होती है, रोपवे के निर्माण को संभव बनाता है।

इसका मुख्य उद्देश्य पर्यटन को बढ़ावा देना है, जिससे आने वाले समय में कोरोना महामारी के साये में डूबे पर्यटन क्षेत्र में उबारा जा सके और पर्यटन क्षेत्र को एक नई दिशा प्रदान की जा सकेगी, इसके अतिरिक्त यात्रियों को बेहतर कनेक्टिविटी और सुविधा प्रदान करना है। इसमें भीड़भाड़ वाले शहरी इलाकों को भी शामिल किया जा सकता है,जहांपारंपरिक जन परिवहन प्रणाली संभव नहीं है। 2022-23 में 60 किमी लंबी 8 रोपवे परियोजनाओं के ठेके दिए जाएंगे। नौकरियां उत्पन्न होगी, कोरोना महामारी की वजह से लाखों लोगों की नौकरियां चली गई है, अगर इससे पर्यटन क्षेत्र बूम आता है तो निश्चित तौर पर नौकरियों और रोजगार के अवसर प्राप्त होंगे। इससे अतिरिक्त दुर्गम पहाड़ी क्षेत्र में रहने वाले लोगों का जीवन आसान होगा और वे मुख्य धारा से जुड़ सकेंगे। साथियों बात अगर हम बजट 2022 में पर्वतमाला परियोजना के धमाकेदार उल्लेख की करें तो, केंद्रीय वित्त मंत्री ने वर्ष 2022-23 के लिए केंद्रीय बजट पेश करते हुए यह घोषणा की थी कि सरकारी-निजी भागीदारी -पीपीपी के आधार पर राष्ट्रीय रोपवे विकास कार्यक्रम - पर्वतमाला परियोजना शुरू की जाएगी। यह परियोजना दुर्गम पहाड़ी क्षेत्रों में पारंपरिक सड़कों के स्थान पर एक पसंदीदा पारिस्थितिकी रूप से स्थायी विकल्प होगा। इस परियोजना का उद्देश्य दुर्गम पहाड़ी क्षेत्रों में पर्यटन को बढ़ावा देने के अलावा, यात्रियों के लिए संपर्क और सुविधा में सुधार करना है। इस परियोजना में भीड़भाड़ वाले शहरी क्षेत्रों को भी शामिल किया जा सकता है, जहां पारंपरिक सामान्य परिवहन प्रणाली संभव नहीं है। वित्त मंत्री ने घोषणा की थी कि वर्ष 2022-23 में 60 किलोमीटर की दूरी के लिए 8 रोपवे परियोजनाओं के ठेके दिए जाएंगे। यह परियोजना वर्तमान में उत्तराखंड, हिमाचल प्रदेश, मणिपुर,जम्मू-कश्मीर और अन्य पूर्वोत्तर राज्यों जैसे क्षेत्रों में शुरू की जा रही है।

साथियों बात अगर हम पर्वतमाला परियोजना पर पीएम के विचारों की करे तो मीडिया के अनुसार उन्होंने बताया कि उत्तराखंड सहित देश के हिमालयी राज्यों में 'पर्वतमाला प्रोजेक्ट' से बहुत फायदा होगा। कहा कि उत्तराखंड के सीमावर्ती गांवों में बुनियादी सुविधाओं का विकास होने के साथ ही सड़कों का जाल बिछाएगा जाएगा। इस प्रोजेक्ट से रुद्रप्रयाग जिले में केदारनाथ, चमोली जिले में गोविंदघाट-घांघरिया समेत उत्तराखंड में 27 प्रोजेक्टों के धरातल पर उतरने की आस भी बढ़ी है। पर्वतमाला योजना से पहाड़ी राज्यों में ट्रांसपोर्टेशन के आधुनिक साधनों की व्यवस्था की जाएगी, ताकि ट्रांसपोर्टेशन आसान हो सके। पीएम मोदी ने कहा कि बॉर्डर एरिया डेवलपमेंट प्रोजेक्ट (बीएडीपी) पर विशेष फोकस किया गया है।

साथियों बात अगर हम पर्वतमाला परियोजना के प्रमुख कारकों की करें तो, रोपवे के बुनियादी ढांचे को संचालित करने वाले प्रमुख कारक

1)परिवहन का किफायती माध्यम- चूंकि रोपवे परियोजनाएं पहाड़ी इलाके में एक सीधी रेखा में बनाई जाती हैं, इस लिए इस परियोजना में भूमि अधिग्रहण की लागत भी कम आती है। इसलिए, सड़क परिवहन की तुलना में प्रति किलोमीटर रास्ते के निर्माण की अधिक लागत होने के बावजूद, रोपवे परियोजनाओं की निर्माण लागत सड़क परिवहन की तुलना में अधिक किफायती हो सकती है।

2)परिवहन का तेज़ माध्यम- परिवहन के हवाई माध्यम के कारण, रोपवे का सड़क मार्ग परियोजनाओं की तुलना में एक फायदा यह है कि रोपवे एक पहाड़ी इलाके में एक सीधी रेखा में बनाए जा सकते हैं।

3)पर्यावरण के अनुकूल- धूल का कम उत्सर्जन। सामग्री के कंटेनरों को इस तरह से डिजाइन किया जा सकता है ताकि पर्यावरण में किसी भी तरह की गंदगी फैलाने से बचा जा सके।

4)लास्ट माइल कनेक्टिविटी- 3 एस (एक तरह की केबल कार प्रणाली) या समकक्ष तकनीकों को अपनाने वाली रोपवे परियोजनाएं प्रति घंटे 6000-8000 यात्रियों को ले जा सकती हैं।

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर उसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि पर्वतमाला परियोजना पर्यटन उद्योग, रोज़गार, पहाड़ों की मुश्किल भौगोलिक स्थितियों के लिए वरदान साबित होगी। पर्वतमाला परियोजना से रोपवे के बुनियादी ढांचे संचालित करने वाले प्रमुख कारकों का प्रभावशाली लाभ होगा।

प्यार रूपी पौधे को सींचना है जरूरी

फूलों सा महकेगा रिश्ता

कोई भी रिश्ता हमेशा जवान रहेगा इसकी गारंटी नहीं होती. रिश्तों को लगातार सींचना पड़ता है. एक साथ जिंदगी शुरू करने वाले दो लोग इस बात को जानते हैं कि रिश्ता बनाना एक लंबी प्रक्रिया है. जरूरत से ज्यादा अपेक्षा का बोझ रिश्ते नहीं उठा पाते हैं और टूट जाते हैं. यह कभी नहीं होता कि हर कोई रिश्ते निभाना जानता हो. हम सभी में कुछ कमियां और कमजोरियां होती हैं. हर कोई अपने जीवनसाथी की भावनाओं को ठीक से समझ नहीं पाता है. एक साथ खुशनुमा जीवन बिताने वाली जोड़ियां बहुत समझदार, बहुत पैसे वाली या मनोविज्ञान की गहरी समझ रखने वाली हो ऐसा नहीं है. अगर लोग अपने रिश्ते में कुछ चीजों को जोड़ते रहते हैं तो रिश्ते लंबे समय तक टिके रहते हैं.

ग़लतियों को मान लेना

हर रिश्ते में लड़ाइयां और गलतफहमियों के लिए पूरी गुंजाइश होती है, लेकिन जब दोनों ही अपनी गलतियों के लिए माफी मांगने की समझबूझ रखते हैं तो रिश्ता हरा-भरा रहता है. अपनी गलती स्वीकारना अपने कद को छोटा करना नहीं है बल्कि यह तो बड़प्पन को बताता है. जब आप अपने अहम को छोड़कर अपने साथी को मनाने की कोशिश करते हैं तो इसका मतलब है कि आपके रिश्ते में एक दूसरे लिए पर्याप्त प्रेम है. अपने साथी की परिस्थिति को समझना भी बहुत ही मायने रखता है क्योंकि उससे भी दूरियां खत्म हो जाती हैं और शिकवों के लिए जगह नहीं रहती.

बातचीत का लहज़ा

आप क्या कहते हैं यह उतना मायने नहीं रखता है बल्कि महत्वपूर्ण यह है कि आप किस तरह से कहते हैं. बातचीत करते हुए अगर आप किसी बात को बहुत गुस्से में कहते हैं तो उसकी प्रतिक्रिया वैसी ही होगी जबकि अगर आप उसे समझाने के अंदाज में कहते हैं तो उसका असर दूसरी तरह होता है. किसी भी बहस में आपको अपने साथी के प्रति बहुत ही नपे-तुले शब्दों का उपयोग करना चाहिए. किसी भी मुद्दे पर आप अपने साथी के साथ किस तरह बात करते हैं उसी से आप दोनों का जुड़ाव स्पष्ट हो जाता है. याद रखिए आपकी टोन किसी भी बात को कहते हुए मायने रखती है.

शेयरिंग रखती है मायने

जब भी आपका जीवनसाथी आपको मैसेज करता है तो आप किस तरह और कितनी देर में उसका जवाब देते हैं इससे भी पता चलता है कि आपका रिश्ता किस दौर से गुजर रहा है. जो अपने जीवनसाथी के फोन या संदेश को महत्व नहीं देते हैं वे अपने रिश्ते को मुश्किल में डाल रहे होते हैं. जिस रिश्ते में दोनों ही साथी एक दूसरे के साथ चीजें शेयर करते रहते हैं या फिर एक दूसरे को जिंदगी के अनुभवों के बारे में बताते रहते हैं वह लंबे समय तक टिका रहता है. एक दूसरे के साथ जुड़ाव बढ़ाने के लिए शेयरिंग बहुत ही अहम है.

प्यार जताने का तरीका

अपने रिश्ते में समय-समय पर प्यार जताना जरूरी होता है ताकि आपके साथी को यह लगता रहे कि आपके लिए इस जुड़ाव की अहमियत है. जीवनसाथी के लिए फूल खरीदना या फिर उसकी पसंद की चीजें करने का अपना महत्व है. यह बहुत छोटी-सी बात लग सकती है लेकिन किसी भी रिश्ते में इसका बहुत ज्यादा महत्व होता है. किसी भी रिश्ते में जब एक व्यक्ति को यह लगने लगता है कि उसकी कोई अहमियत नहीं है तो यहीं से दरार पड़नी शुरू होती है. अगर दोनों एक दूसरे के साथ जुड़ाव महसूस करते हैं तो रिश्ता ताउम्र बना रहता है. ऐसे जीवनसाथी कभी भी संवाद की कमी, पैसों की दिक्कतों या फिर रिश्तेदारों के कारण रिश्ते को खत्म नहीं करते हैं.

एक-दूसरे को स्वीकार करना

किसी रिश्ते की शुरुआत में दो व्यक्तियों में बहुत ज्यादा प्रेम होता है और तब सारा ध्यान खूबियों पर ही होता है लेकिन समय के साथ एक दूसरे की कमियां भी सामने आती हैं. लेकिन इन कमियों को नजरअंदाज करके अगर आप खूबियों पर ही ध्यान लगाएं तो रिश्ता कायम रहता है. जब आप किसी भी कमजोरी या कमी को ज्यादा बड़ा करके देखने लगते हैं तो चीजें खराब मोड़ लेने लगती हैं. किसी भी खुशहाल रिश्ते में एक दूसरे से प्रेम के अलावा किसी भी अन्य चीज की अपेक्षा से बचना चाहिए. कोई भी व्यक्ति पूरी तरह परफेक्ट नहीं होता है परफेक्शन तो आपको तलाशना पड़ता है.

शानदार ढंग से गुज़ारें वक़्त

अगर आप दोनों अपना खाली वक्त एक दूसरे के साथ गुजारना पसंद करते हैं तो समझिए कि आपका रिश्ते बिल्कुल सुरक्षित दायरे में हैं. अक्सर लोग अपने खाली वक्त में अकेले कहीं जाना पसंद करते हैं या उन चीजों को करने के बारे में सोचते हैं जो लंबे समय से अटकी पड़ी है. तब जीवनसाथी को मिलने वाला वक्त और भी कम हो जाता है. ऐसे में आपसी उलझनों को सुलझाने का समय ही नहीं मिलता है. संवाद से सारी चीजों का हल निकाला जा सकता है मगर तब क्या होगा जब इस संवाद के लिए समय ही न हो. साथ बिताया जाने वाले समय की ज्यादा न हो लेकिन जितना हो वह शानदार ढंग से बीते तो रिश्ता बेहतर होता है.

फ्लॉप लवस्टोरी का क्या कहना....!

कॉलेज के दिनों की बात है, मुझे लड़कियों की उस श्रेणी में रख दिया गया था जो किसी लड़के की दोस्त या छोटी बहन की भूमिका में तो हो सकती थीं, लेकिन कभी गर्लफ्रेंड नहीं बन सकती थीं. यह सारी जानकारी इसलिए कि आप मेरी पृष्ठभूमि से परिचित हो जाएं. खैर, फरवरी की तीन या चार तारीख थी, मैं कॉलेज कैंटीन में बैठी हुई थी, फिजा में कॉफी की महक और कानों में प्यार की बातें सुनायी दे रही थीं. कॉलेज के लड़के-लड़कियां दस दिन पहले से ही वैलेंटाइन डे की योजनाएं बनाने लगे थे.

मुझे उसका इंतज़ार था

मेरी तरफ किसी का ध्यान ही नहीं था, जैसे मैं वहां मौजूद ही न थी. वैसे मुझे इस सब कि आदत पड़ चुकी थी, लेकिन दिल में एक कसक अवश्य थी. कॉलेज में एक लड़का था, जो बहुत क्यूट था, मुझे वह बहुत अच्छा लगता था, विशेषकर इसलिए कि उसके बोलने का अंदाज गजब था. मैं मन ही मन उसकी वैलेंटाइन बनने के ख्वाब देखा करती थी. मैं कभी अपनी तरफ से पहल करने का साहस न जुटा पायी, शायद परम्परागत संस्कार के कुछ अंश मौजूद थे कि पहल तो लड़के की तरफ से ही होनी चाहिए. मैं इसी सोच में बैठी हुई थी कि कॉलेज कैंटीन का वेटर मेरे पास एक कार्ड लाया और बोला, 'आपके लिए किसी ने भेजा है.'

...और वो दिन आ ही गया

मैंने कांपते हाथों से कार्ड खोला, लिखा था, "क्या तुम मेरी वैलेंटाइन बनोगी? अगर हां, तो 14 फरवरी को सुबह 11 बजे मैं तुम्हारा इंतजार करूंगा.' नीचे उसी क्यूट लड़के का नाम और रेस्टोरेंट का पता लिखा था. मुझे लगा कि किसी ने मेरे साथ मजाक किया है. इसलिए किसी को बताया नहीं. इस निमंत्रण को भूलने का प्रयास किया, लेकिन फिर ख्याल आता कि अगर यह मजाक न हुआ तो? इसी कशमकश में वैलेंटाइन डे आ गया. मैं बन संवरकर ठीक समय पर निर्धारित जगह पहुंच गई. वह वहां नहीं था. मैं अपनी झेंप मिटाने के लिए कोने की टेबल पर बैठ गई और कॉफी आर्डर की. कॉफी आधी खत्म भी न हुई थी कि रेस्टोरेंट का दरवाजा खुला, वही था, क्यूट लड़का. वह सीधा मेरे पास आया, मेरे दिल की धडकनें तेज हो गई थीं. उसने टेबल के पास आते ही 'हाय' कहा और मेरे जवाब से पहले ही बोला, "तुमने तो बहुत लड़कों को किस किया होगा!" इतना कहते ही वह जितनी तेजी से आया था, उससे अधिक तेजी से गायब हो गया. मेरा पहला वैलेंटाइन डे फ्लॉप हो चुका था.

आसान नहीं है ये बंधन

मैं गुस्से से भरी घर लौटी. उसका क्या मतलब था? तुमने तो बहुत लड़कों को किस किया होगा? उसने यह कैसे सोच लिया कि किसी लड़की से इस तरह की बात कहनी चाहिए? अगर उसे मुझे अपनी वैलेंटाइन नहीं भी बनाना था, तो भी कम से कम उसे यह बात तो नहीं कहनी चाहिए थी? उसकी समस्या क्या थी? लेकिन पहली बात तो यह कि मैं ही उसे पसंद क्यों कर रही थी? लम्बे समय तक मैं उसके शब्दों के बारे में सोचती रही, हर कोण से समीक्षा व विश्लेषण करती रही. धीरे धीरे मेरा गुस्सा शांत होने लगा. वास्तव में यह बंधन आसान नहीं है. प्यार में वही दो लोग आपस में बंधते हैं जो चमत्कारिक ढंग से एक दूसरे के लिए समान भावनाएं रखते हो.

उसके नॉलेज ने किया प्रभावित

बहरहाल, मैंने अपने आपसे वायदा किया कि अगली बार अगर किसी लड़के के लिए मेरी भावनाएं जागृत हुईं तो मैं उसकी तरफ से पहल का इंतजार नहीं करूंगी. एक साल गुजर गया. फिर फरवरी आ गई. वैलेंटाइन डे फिर सुनायी देने लगा. मेरी एक करीबी दोस्त ने अपने जन्मदिन की पार्टी में मुझे बुलाया था. वहां मेरा परिचय एक लड़के से हुआ, उससे पॉलिटिक्स व फिल्मों पर बातें हुईं. उसकी जानकारी, ज्ञान व विचारों की स्पष्टता ने मुझे प्रभावित किया. फिर संयोग यह हुआ कि उसी सप्ताह उससे कई मुलाकातें हो गईं और काफी देर देर तक हमने आपस में बातें कीं. मुझे लगा कि वह वैलेंटाइन डे के सिलसिले में मुझसे मालूम करेगा, शायद या न भी करे.

...और मैंने पहाड़ से छलांग लगा दी

जीवन में एक पल आता है जब आपको पहाड़ से कूदने के बारे में तय करना होता है. कुछ लोगों के लिए यह पहाड़ व्यापार में रिस्क लेना होता है, कुछ के लिए कॉलेज छोड़ना तो कुछ के लिए शहर बदलना. मेरे लिए पहाड़ वह लड़का था, और जब मैं कूदी तो मैंने खुद को भावनात्मक रूप से बहुत कमजोर कर लिया था. मैंने उसका नंबर मांगा. हम एक दूसरे को टेक्स्ट करने लगे. लेकिन फिर भी उसने मुझसे वैलेंटाइन डेट पर चलने के लिए नहीं कहा. आखिर 13 फरवरी की शाम को मैं पहाड़ से कूद गई. मैंने उसे टेक्स्ट किया, "मैं यह जानना चाहती हूं कि मैं दोस्त मटेरियल हूं या दोस्त से अधिक हूं?" उसका जवाब नहीं आया. मैं इंतजार करती रही.

मुझसे शादी करोगी?

अगली सुबह यानी 14 फरवरी यानी वैलेंटाइन डे को उसका मैसेज आया, "मुझे लगता है कि यह टेक्स्ट का विषय नहीं है, हमें आज लंच पर मिलना चाहिए." मैं जब रेस्टोरेंट पहुंची तो मेज सजी थी, वह फूल लिए खड़ा था, मेरे पास आते ही उसने फूल दिए और फिर एक घुटने पर होकर उसने रिंग देते हुए कहा, "क्या मुझसे शादी करोगी?" रेस्टोरेंट में गीत बजने लगा 'तुम मिले'. मुझे अपना पहला फ्लॉप वैलेंटाइन डे याद आ गया और उस क्यूट लड़के के शब्द भी 'तुमने तो बहुत लड़कों को किस किया होगा'. उस समय मुझे दुःख हुआ था, लेकिन अब नहीं क्योंकि मैं समझ चुकी थी कि वह मुझे हर्ट नहीं करना चाहता था, वह मुझे चाहता ही नहीं था. उसने मुझे महत्वपूर्ण सीख दी थी कि अगर आप रिस्क लेने के लिए तैयार नहीं हैं तो रिवॉर्ड भी नहीं मिलेगा. शुक्रिया क्यूट लड़के. ..और हां, वैलेंटाइन डे पर मैंने एक लड़के को किस किया था, उसे आज भी किस कर रही हूं. वह मेरा पति है.

▲ अंतरा पटेल

मई 2008 में औद्योगिक संगठन एसोचम ने उच्च शिक्षा के संबंध में एक स्टडी रिपोर्ट पेश की थी, जिसके मुताबिक उन दिनों करीबन 4 लाख 50 हजार भारतीय छात्र उच्च शिक्षा के लिए विदेश जाते थे और ये हर साल करीब 13 बिलियन अमेरिकी डॉलर खर्च किया करते थे. उद्योग निकाय एसोचम का सुझाव था कि भारत सरकार अगर छात्रों को विदेश में पढ़ने जाने से रोक सके तो हर साल भारतीय छात्र विदेशों में जितनी पूंजी खर्च करके पढ़ते हैं, उतनी पूंजी से हर साल, उस समय तक भारत में मौजूद सभी आईआईटी और आईआईएम की संख्या दोगुनी जा सकती थी. कहने का मतलब यह कि जितने आईआईटी और आईआईएम मौजूद थे, उतने आईआईटी और आईआईएम हर साल नये बनवाये जा सकते थे,जितना धन तब भारतीय छात्र विदेशों में ट्यूशन फीस के रूप में खर्च करते थे.

उच्च शिक्षा बदल देगी भारत की तस्वीर

अंतर्राष्ट्रीयकरण से मिलेगी वर्ल्ड रैंकिंग

2024 तक हो जाएंगे 18 लाख छात्र, 80 बिलियन डॉलर का खर्च

11 साल बाद एक नये अध्ययन के मुताबिक अकेले अमेरिका में ही 2 लाख 2 हजार भारतीय छात्र मौजूद थे. कनाडा, ऑस्ट्रेलिया में भी करीब इतने ही छात्र उच्च शिक्षा के लिए मौजूद थे और अगर भारत से विदेश पढ़ने गए 2019 में सभी छात्रों की संख्या को जानें तो ये 7 लाख 70 हजार से ज्यादा थे. उस समय ये छात्र हर साल विदेशों में पढ़ाई पर 28 बिलियन अमेरिकी डॉलर खर्च कर रहे थे. कहने का मतलब यह कि 2019 में भारत में जितने आईआईटी या आईआईएम थे, उन्हें इस राशि से हर साल दोगुना किया जा सकता था. अब दो साल बाद यानी 2024 के लिए अनुमान यह है कि भारत के करीबन 18 लाख छात्र विदेशों में पढ़ रहे होंगे और ये हर साल पढ़ाई पर करीब 80 बिलियन डॉलर या इससे भी ज्यादा खर्च कर रहे होंगे.

आर्थिक सुधार के लिए उठाने होंगे कदम

इन आंकड़ों से अंदाजा लगाया जा सकता है कि भारत से उच्च शिक्षा के लिए बाहर गए छात्र कितने बड़े पैमाने पर विदेशी मुद्रा बाहर ले जा रहे हैं. शायद यही वजह है कि शिक्षा क्षेत्र के तमाम जानकार मानते हैं कि भारत में उच्च शिक्षा का अंतर्राष्ट्रीयकरण न सिर्फ शिक्षा के क्षेत्र में दूसरी पीढ़ी के सुधार की कुंजी हैं बल्कि यह आर्थिक सुधार का भी बहुत बड़ा आधार बन सकती है. भारत में शिक्षा के क्षेत्र में ऐसे सुधार की उम्मीद पिछले तीन दशकों से की जा रही रही है. लेकिन साल 2020 में पहली बार प्रस्तुत राष्ट्रीय शिक्षा नीति में इस प्रस्ताव की ठोस तरीके से चर्चा की गई है. राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 में उच्च शिक्षा के अंतर्राष्ट्रीयकरण का सुझाव नई शिक्षा नीति के महत्वपूर्ण और दूरगामी बदलाव का व्यवहारिक हिस्सा है. यह प्रस्ताव उच्च शिक्षा के क्षेत्र में भारत को वैश्विक स्टडी डेस्टिनेशन बनाने की वकालत करता है और इसके जरिये भारत की उच्च शिक्षा में सभी तरह के व्यापक बदलावों को देखता है.

2030 तक का रोड मैप तैयार

एनईपी के तहत जो महत्वाकांक्षी रोड मैप बनाया गया है, उसके तहत साल 2030 तक भारत में उच्च शिक्षा का अंतर्राष्ट्रीयकरण किया जाना है, इससे भारत के आर्थिक और शैक्षणिक दोनो ही परिदृश्यों में व्यापक परिवर्तनकारी प्रभाव पड़ेगा. एनईपी के ब्लू प्रिंट में विस्तृत चर्चा करते हुए कहा गया है कि विश्व के टॉप-100 विश्वविद्यालयों में से कम से कम एक तिहाई विश्वविद्यालयों को भारत में काम करने की इजाजत दी जायेगी. इसके लिए भारत में इनके प्रवेश को सुगम बनाने हेतु व्यवस्थागत और प्रशासनिक दोनो ही किस्म के बदलाव किये जाएंगे. इन विदेशी विश्वविद्यालयों को देश के दूसरे स्वायत्त शिक्षण संस्थानों की तरह कई किस्म की छूट दी जाएगी. इसके लिए भारत का शिक्षा मंत्रालय उच्च शिक्षा आयोग की स्थापना के लिए विधेयक तैयार कर चुका है, जिससे विदेश के विश्वविद्यालयों को भारत में अपनी शाखाएं खोलने का मौका मिलेगा. उच्च शिक्षा आयोग विधेयक 2020 की धारा 20 (4) में इस बात का खास तौरपर जिक्र किया गया है कि दुनिया के प्रतिष्ठित और अपने क्षेत्र में अभिनव काम कर रहे विश्वविद्यालयों को भारत में लाने की हर कोशिश की जाएगी ताकि ये प्रतिष्ठित विश्वविद्यालय भारत में अपना विस्तारित कैंपस खोल सकें. अगर यह सब कुछ योजना के मुताबिक चला तो साल 2030 तक भारत की उच्च शिक्षा का अंतर्राष्ट्रीयकरण हो जायेगा, जो कि भारत में क्वालिटी शिक्षा का माहौल तैयार करने के लिए बहुत जरूरी है. इस विधेयक में सिर्फ विदेशों से ही महत्वपूर्ण विश्वविद्यालयों को भारत में बुलाने का लक्ष्य नहीं हैं बल्कि भारत में भी उन शैक्षिक संस्थानों को जो अपने अपने क्षेत्र में शानदार काम कर रहे हैं, उन्हें उनके वैश्विक विस्तार के लिए प्रोत्साहित किया जायेगा.

साबित होगी गेमचेंजर रणनीति

भारत में इस समय करीब 1000 विश्वविद्यालय और करीब 44,000 के आसपास कॉलेज हैं जो या तो शैक्षिक गतिविधियां संचालित कर रहे हैं या जल्द ही शुरू करेंगे. लेकिन भारत में 44,000 के आ स पा स कॉलेजों में से एक भी ऐसा नहीं है, जो वर्ल्ड यूनिवर्सिटी रैंकिंग में कोई जगह बना सके. इसी तरह ग्लोबल टैलेंट कम्पटीटिव इंडेक्स में शामिल 132 देशों में भारत 72वें पायदान पर है. जाहिर है यह भारत की खराब उच्च शिक्षा की द्योतक है. इससे साफ है कि भारत न तो उच्च शिक्षा के क्षेत्र में प्रगति कर रहा है और न ही काबिल छात्रों और विद्वानों को देश में रोक पा रहा है. इसकी वजह हमारी पठन, पाठन की संस्कृति तो है ही, एक बड़ा संकट भारत के शिक्षा क्षेत्र में अफसरशाही का भी है, जिसने देश की उच्च शिक्षा व्यवस्था पर अपनी शिकंजेबंदी कर रखी है. ऐसे में निश्चित रूप से अगर भारत में उच्च शिक्षा का अंतर्राष्ट्रीयकरण हुआ तो यह गेम चेंजर रणनीति साबित होगी.

क्रिकेट में चमके भविष्य के सितारे

एंटीगुआ के सर विवियन रिच* स्टेडियम में जब दिनेश बाना ने 5 फरवरी 2022 को विजयी रनों के रूप में छक्का मारा तो टीम इंडिया ने अपने अंडर-19 विश्व कप के रिकॉर्ड खिताबों का विस्तार करते हुए पांच तक पहुंचाया. इससे पहले भारत ने यह प्रतियोगिता 2000 में (मुहम्मद कैफ), 2008 में (विराट कोहली), 2012 में (उन्मुक्त चंद) व 2018 में (पृथ्वी शॉ) के नेतृत्व में जीती थी. 2022 की जीत यश ढुल के नेतृत्व में हासिल हुई. भारत तीन बार रनर्स अप भी रहा है. एक अन्य उल्लेखनीय बात यह है कि हर दूसरे वर्ष होने वाली इस प्रतियोगिता में भारत रिकॉर्ड लगातार पांचवीं बार फाइनल में पहुंचा था. अंडर-19 विश्व कप में शानदार प्रदर्शन करने के बाद अनेक खिलाड़ी भारत के लिए अंतर्राष्ट्रीय मंच पर चमके हैं, जिनमें से कुछ प्रमुख नाम हैं विराट कोहली, युवराज सिंह, मुहम्मद कैफ, शिखर धवन, पृथ्वी शॉ आदि. इसलिए यह प्रश्न प्रासंगिक है कि क्या वर्तमान अंडर-19 में भी ऐसे खिलाड़ी हैं, जो निकट भविष्य में भारत के लिए क्रिकेट सितारों के रूप में चमक सकते हैं? अंडर-19 एशिया कप व अब अंडर-19 विश्व कप में जिन खिलाड़ियों ने अपने प्रदर्शन से निरंतर प्रभावित किया है, उनमें विशेष रूप से कप्तान यश ढुल, उप कप्तान शेख रशीद, राज बावा, निशांत सिंधु आदि शामिल हैं. इनकी प्रतिभा को देखते हुए लगता है कि यह चंद वर्षों के भीतर शायद भारत के लिए भी खेलते हुए नजर आयें. वैसे इनमें से अधिकतर ने अपने लिए आईपीएल कॉन्ट्रैक्ट तो सुनिश्चित कर ही लिए हैं.

अंडर-19 में यश, रशीद, राज और निशांत का जलवा

दादा तरलोचन बावा ने जीता था गोल्ड

तरलोचन बावा के करिअर का यादगार पल 1948 के लंदन ओलंपिक में आया था, जब उन्होंने ग्रेट ब्रिटेन के विरुद्ध महत्वपूर्ण गोल किया था और भारत ने हॉकी का स्वर्ण पदक हासिल किया था. इसके 74 वर्ष बाद उनके पोते राज अंगद बावा ने खेलों में अच्छे प्रदर्शन की अपनी खानदानी विरासत को कायम रखा और क्रिकेट के अंडर-19 विश्व कप फाइनल में अपने हरफनमौला खेल की बदौलत प्लेयर ऑफ द मैच बने. तरलोचन का गोल्ड मेडल राज के कमरे के दरवाजे पर लटका रहता है ताकि सुबह उठते ही उनकी नजर उस पर पड़े और वह प्रेरित हों. राज के कोच उनके पिता सुखविंदर बावा ही हैं जिन्होंने कुछ समय के लिए युवराज सिंह को भी कोच किया था. राज अच्छी बल्लेबाजी तो करते ही हैं, लेकिन वह पहले ऑफ-स्पिन गेंदबाजी करते थे और फिर तेज गेंदबाजी करनी शुरू कर दी. वह फिलहाल 130 किमी प्रति घंटा की रफ्तार से गेंदबाजी करते हैं, जिसमें वृद्धि की संभावना है.

आसान नहीं था गुंटूर के इस छोरे का सफर

अंडर-19 विश्व कप के सेमीफाइनल में 94 और फाइनल में 50 रन के महत्वपूर्ण योगदान करने वाले शेख रशीद गुंटूर में एक ऐसे परिवार से आते हैं जिसके लिए दिन में दो वक्त की रोटी जुटा पाना भी कठिन है. उनके पिता बालिशा एक छोटी सी कीटनाशक बेचने वाली दुकान में कर्मचारी हैं. अगर भारत के पूर्व विकेटकीपर व पूर्व मुख्य चयनकर्ता एमएसके प्रसाद, जो स्वयं गुंटूर के हैं, रशीद को खेलते हुए न देखते तो रशीद जैसी उल्लेखनीय प्रतिभा गुमनामी के अंधेरे में खोकर रह जाती. रशीद को आंध्र क्रिकेट एसोसिएशन की मंगलगिरी अकादमी में रहने, खाने-पीने, कपड़े व शिक्षा की व्यवस्था करायी गई और ट्रेनिंग के लिए इंग्लैंड भी भेजा गया. आज उन्हें आंध्र की क्रिकेट संरचना से निकलने वाले सबसे बड़े सितारे के रूप में देखा जा रहा है.

धुल की पॉवर हिटिंग

अंडर-19 विश्व कप के सेमीफाइनल में ऑस्ट्रेलिया के विरुद्ध मेरठ के यश धुल के 110 रन ने सबका दिल जीत लिया है. विराट कोहली व उन्मुक्त चंद के बाद वह भारत के तीसरे कप्तान हैं, जिन्होंने अंडर-19 विश्व कप के सेमीफाइनल या फाइनल में शतकीय पारी खेली है. यश के नेतृत्व में ही भारत ने अंडर-19 एशिया कप जीता था. अनुमान है कि अपने अन्य साथियों के साथ यश भी आईपीएल ऑक्शन में हॉट प्रॉपर्टी होंगे. यश ने अपनी पॉवर हिटिंग पर कड़ी मेहनत की है. उनके पिता विजय धुल का केवल एक ही सपना है कि यश भारत के लिए खेले व मैच जिताये.

hillviewsamachar@gmail.com

हिलव्यू समाचार

06

जयपुर >> सोमवार, 14 फरवरी, 2022

छोटे-छोटे आदर्श स्थापित कीजिये

व्यक्तित्व विकास

23 दिसम्बर, 1988 मेरी ज़िन्दगी के सर्वश्रेष्ठ दिनों में एक रहा है। जब लॉयन्स उप प्रान्तपाल की हैसियत से मैं समारोह की अध्यक्षता कर रहा था और मुख्य अतिथि थे विश्वप्रसिद्ध नेता, अभिनेता श्री सुनील दत्त।

दत्त साहब को हमने जोधपुर के पांच सितारा उम्मेद पैलेस में ठहराया। दूसरे दिन सवेरे गहरे कोहरे की वज़ह से हवाईजहाज आने में देरी हो रही थी। हम होटल की लॉबी में बैठे हुए वक़्त का इन्तज़ार कर रहे थे।

ग्यारह बजे के क़रीब दत्त साहब ने विमान की सही जानकारी चाही। मालूम हुआ कि तीन बजे से पहले जहाज़ नहीं आ पायेगा, उन्होंने बम्बई टेलीफोन करने की इच्छा जताई। तुरन्त फ़ोन मंगवाया गया उन्होंने अपनी बेटी को उम्मेद पैलेस के नम्बर बता कर बात ख़त्म कर दी। कुछ ही देर में उधर से कॉल आई, जिस पर लगभग पन्द्रह मिनट बात कर दत्त साहब ने देरी की वज़ह और वहां के ज़रूरी कामों के लिए निर्देश दिये।

ग्यारह बज कर तीस मिनट पर वे पैलेस छोड़कर हवाई अड्डे पर ही विमान का इन्तज़ार करने का कहकर, खड़े हो गये। ताकि बारह बजे से दूसरे दिन का किराया नहीं वसूल लिया जाये।

हम सभी लॉयन साथी आश्चर्य से उनके इन फ़ैसलों को देख रहे थे। कितना अहसास था उनके दिल में कि एक संस्था पर नाजायज़ खर्च का भार उनकी वज़ह से नहीं पड़ पाये। क्या हमारी ज़िन्दगी में हम दूसरों के प्रति इतने संवेदनशील रहते हैं?

मैं इस घटना को सैकड़ों जगह बता चुका हूं और ज़िन्दगी की बहुत बड़ी शिक्षा उस दिन हासिल की, कि महान और बड़ा इन्सान बनने के लिये ज़रूरी नहीं कि आप बहुत बड़े काम ही करें, आप हर छोटे मोटे काम को इस तरीके, इस स्टाइल से करें, जिससे आपकी महानता झलके, आपका बड़प्पन नज़र आये और आप दूसरों के लिए एक मिसाल बन जायें।

उन्हीं दिनों की एक और घटना मेरे मनमस्तिष्क में हमेशा ताज़ा रहेगी। ज़रूरी काम का तकाजा कर मेरा एक दोस्त कुछ देर के लिये मेरी मोटरसाईकिल मांग कर ले गया। दो दिन तक ना मुझे दोस्त, ना मोटरसाइकिल ना उनकी परछाई ही दिखाई दी। तीसरे दिन मित्रवर का टेलीफोन आया कि मोटरसाइकिल तीस किमी दूर गांव में चाय की थड़ी के पास खड़ी है। मैं घबराकर गांव पहुंचा। मोटरसाइकिल की पेट्रोल की टंकी बिलकुल खाली थी, इंजिन जाम था, ब्रेक टूटा हुआ था। जैसे तैसे ट्रेक्टर में मोटरसाइकिल लदवा कर मैं लाया, सैकड़ों रुपये खर्च कर ठीक करवाई, फ़िर चैन की सांस ली।

ना मैं जीवन में दत्त साहब को भूल पा रहा हूँ, ना उस दोस्त को जो उसके बाद मुझे देख कर रास्ता बदल देता था।

हमें कितना अहसास अपने आसपास वालों के लिए रहता है। कैसा व्यवहार अपने परिवार, समाज, मित्रों, मानवता के लिए करते हैं। यही ज़िन्दगी में लोकप्रियता का सुकून का थर्मामीटर है। किसी से भी कोई व्यवहार करने के पहले रुकें, सोचें, यदि यही व्यवहार आपके साथ किया जाये तो आपको कैसा लगेगा। मेरा एक परिचित रोज़ाना सुबह टेलीफोन की लिस्ट लेकर जान पहचान वालों के घर पहुंच जाता। हर जगह तीन चार फोन कर हैलो, हाय कर रवाना हो जाता। लिहाज़ में कोई उससे कुछ नहीं कह पाता, झूठी मुस्कान से उसका स्वागत भी किया जाता। चाय आदि भी पिलाई जाती, परन्तु उसके जाते ही उसकी चर्चा छिड़ जाती। जिस घर में वह जाता है वहीं उसे नापसन्द किया जाता है।

एक घटना ने मेरी सोच, मेरी धारणा ही बदल दी। मेरे एक मित्र ने हवाईजहाज की गति से भी ज़्यादा तरक्की की। चन्द सालों में ही उसका निर्यात संसार घर में फैल गया। लगभग पचास देशों में उसके ऑफ़िस खुल गये।

एक दिन उसके ऑफ़िस से मुझे बेहद ज़रूरी फोन करना था। मैंने उससे इजाज़त लेकर अपने बेटे को फोन लगाया और सुनील दत्त साहब वाली स्टाइल में नम्बर देकर फोन रख दिया। उधर से मेरी कॉल आई, मैंने दस बारह मिनट इत्मिनान से बात की। अपने व्यस्त कामकाज को छोड़ मेरा करोड़पति मित्र आँखें फाड़े यह सब होता देख रहा था।

फिर वह शुरू हो गया, ''आपने ऐसा क्यों किया? यहां से ही बात कर लेते ना। क्या फ़र्क पड़ जाता। उधर से फोन करवाया? क्या मैं ग़ैर हूँ? एक आप है, दूसरे हमारे दोस्त राजेश हैं। जब भी यहां आते हैं, सारे ज़रूरी ग़ैर जरूरी फोन मेरे यहां से ही करते हैं। पैट्रोल टैंक खाली करके गाड़ी खड़ी कर जायेंगे। सारे स्टाफ वाले उनसे चिढ़ते हैं। मैं बचपन की दोस्ती की वज़ह से कुछ नहीं कहता। एक आप हैं, एक राजेश है। कितना फ़र्क है आप दोनों में।''

अब मैं आंखें फाड़े उस करोड़पति की शक्ल देख रहा था, बिलियर्ड जैसी टेबिल पर बेशक़ीमती अनगिनत टेलीफोन के मॉडल देख रहा था और वहां की खिड़की से नीचे लाइन से खड़ी चमचमाती देशी विदेशी कारों की संख्या गिनने की असफल कोशिश कर रहा था।

दस हज़ार कर्मचारियों से काम लेने वाला, रोज़ाना लाखों रुपये कमाने वाला करोड़पति यदि अपने बचपन के दोस्त का इस तरह का व्यवहार बर्दाश्त नहीं कर सकता है तो एक साधारण इन्सान क्या सहन कर पायेगा?

मैंने ज़िन्दगी का नियम बना लिया है, कभी किसी मित्र, संबंधी, सहयोगी, पड़ोसी से साधन मांगने का व्यवहार नहीं रखना है। यदि बहुत ही मज़बूरी में ज़रूरत पड़ भी गई तो मैं दुरुपयोग नहीं करता।

अधिकांश व्यक्ति अपना समय, साधन, श्रम अपने स्वयं के लिये ही उपयोग करने को इच्छुक रहते हैं। सम्बन्ध, मित्रता या दबाववश यदि आप उससे अपेक्षा करेंगे, उसके साधन पर स्वतः ही अपना अधिकार समझेंगे तो संकोचवश वह आपको भले ही इन्कार न कर पाये परन्तु आपकी छवि उसके हृदय में अच्छा नहीं रह पायेगी।

अतः अपने सम्बन्धियों, मित्रों के संग व्यवहार में अनुचित लेनदेन के प्रति सतर्क रहें।

हमारे प्यारे वन्य जीवः कैट फैमिली-लिंग्स

डॉ कविता माथुर

प्यारे बच्चों को कविता आंट का ढेर सारा प्यार और चॉकलेट्स,

बच्चों याद है न हम आजकल कैट-फ़ैमिली के कम जाने जाने वाले सदस्य लिंग्स के बारे में जानकारी हासिल कर रहे हैं, है न?

लिंग्स को हाई-आल्टीट्यूड माफ़िक़ आता है और ये कुशलता से पेड़ पर चढ़ जाते हैं। इनके पैरों के बड़े बड़े पैड्स इसमें मददगार होते हैं। तैरना भी खूब जानते हैं ये। ठंडे प्रदेशों में ये हल्के रंग के होते हैं और इनके फ़र भी थिकर होते हैं जबकि साउथ वेस्ट अमेरिका में ये गहरे रंग और कम फ़र वाले होते हैं और इनके पैर भी कम पैड्स वाले होते हैं।

क़रीब दो महीने के जेस्टेशन -पीरियड के बाद ये तीन से चार की संख्या में लिटर पैदा करते हैं। सामान्यतः ये एकाकी जीव होते हैं और बहुत ही छोटे समूहों में ही मिलते हैं।

जहाँ इनकी अन्य प्रजातियाँ पक्षियों और छोटे आकार के मैमल्स (स्तनपायी) का भोजन करती हैं, यूरेशियन लिंग्स और बॉबकैट्स हिरणों जैसे ज़रा बड़े आकार के जीवों को खाना पसंद करते हैं। कनैडियन लिंग्स नॉर्दर्न अमेरिका में पाये जाते हैं और इनका पसंदीदा आहार होते हैं वहीं मिलने वाले स्नोशू ख़रगोश। दरअसल ख़रगोशों की उपलब्धता पर ही इनकी ज़िंदगी निर्भर होती है और इनकी संख्या भी। इसीलिए बच्चों, आप देखेंगे कि यू एस के उन तमाम जंगलों में जहाँ स्नोशू ख़रगोशों का निवास है ये पाये जाते हैं, जैसे कि मिन्नेसोटा, आईडाहो, मैने, न्यू हैमिस्फ़िअर, मॉनटाना, वॉशिंगटन इत्यादि। इसके अलावा नोवा-स्कोटिया को छोड़कर कैनेडा के विस्तृत बॉरियल जंगलों में ये मिलते हैं।बॉरियल जंगल , जो कि उत्तरी वन कहे जाते हैं क्योंकि ये पृथ्वी के क़रीब 11% उस इलाक़े को कवर करते हैं जो बर्फीले हैं और नॉर्थ में ही हैं। यानी कि बर्फ़ से आच्छादित जंगल। यहाँ के वन्यजीव जानवरों की श्रेणी में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं बच्चों, है न मज़ेदार बात!

क्रमशः

14 फरवरी वेलेंटाइन डे पर विशेष

मोहब्बत के पीछे का सच...

कायनात, सृष्टि का अस्तित्व वंश वृद्धि पर ही निर्भर है और वंश वृद्धि तब तक सम्भव नहीं जब तक कि इसमें भावनायें नहीं जुड़ जाती हैं, इंसान ने अपने ऐशोआराम के लिये कम्प्यूटर, रोबोट सब ईज़ाद कर लिये लेकिन जो जीव और निर्जीव में अंतर है उसका आविष्कार। नहीं कर पाये और वह हैं -- भावनायें, जज़्बात। भावनायें चाहे ममता की हों या प्रेम की, इनके अस्तित्व पर ही संसार टिका हुआ है और मेरी नज़र में यही 'मोहब्बत' है।

मोहब्बत के लिये मनुष्य से लेकर हर जीव में दो जनों का होना अनिवार्य है और चूँकि वैज्ञानिक नियम कहता है - जीवन संघर्ष। यानि वंश वृद्धि हेतु सर्वश्रेष्ठ को विजेता बनाये जाने के पक्ष में वातावरण और शारीरिक गठन का निर्माण किया गया है । जहाँ नर को बलशाली और संघर्ष करने हेतु मज़बूत बनाया गया है वहीं मादा को कोमल और आश्रिता रूप दिया गया है। चूँकि श्रेष्ठतम वंश आगे बढ़ाया जाये, प्रकृति ने नर में इस तरह के हार्मोन विकसित किये हैं जिनसे वह प्रतिकूल वातावरण से स्वयं को व अपने आश्रितों को सुरक्षित रखने में सक्षम हो, वहीं मादा में श्रेष्ठ नर पर आश्रित होने व उसे आकर्षित करने की शक्ति प्रदान की है। चूँकि मादा ही वंश वृद्धि की मुख्य वाहक है अतः उसको कोमल परंतु उस लता समान मानसिकता के हार्मोन से सजाया है जो अपने निकट तने को जकड़ कर उसके अस्तित्व पर छा जाना चाहती है। शारीरिक रूप से अवश्य वह कोमल परन्तु भावनात्मक रूप से बेहद मज़बूत उसकी रचना की गई है। वह सर्वश्रेष्ठ नर को चुनने को ही इच्छुक रहती है ताकि वंशावली और भी अधिक उत्तम और परिस्थितियों से संघर्ष में सक्षम सन्तान को जन्म दे सके ।

परन्तु नर की मानसिकता बिलकुल भिन्न है, वह मादा की ओर आकर्षित होता है,उसको हासिल करने को इच्छुक भी रहता है उससे सम्बंध भी बनाता है परन्तु वंश वृद्धि की ओर उसको कोई विशेष रूचि नहीं रहती। आप ने पढ़ा, सुना होगा कि ऋतुकाल में शेर अपने बच्चों को ही मार डालता है ताकि शेरनी का ध्यान बच्चों पर से हट जाये और वह शेर की ओर आकर्षित हो सके । वहाँ शेरनी अपने बच्चों को सुरक्षित रखने हेतु शेर से सामना करने पर आमादा हो जाती है । शेर यह भी बर्दाश्त नहीं कर सकता कि शेरनी किसी दूसरे शेर के संसर्ग में आये और यहीं दो शेरों में इतनी भयानक लड़ाई देखी जाती है जिसमें एक शेर अपनी जान तक गवाँ देता है और यही सिद्ध होता है -

जीवन संघर्ष (survival for existence)।

अब हम जीवों से आगे बढ़ कर मनुष्य पर स्वयं को केंद्रित करते हैं। आदिकाल से महिला भी सर्वश्रेष्ठ पुरुष की ओर आकर्षित हुई है ताकि श्रेष्ठ वंश को आगे ले जा सके। धीरे धीरे मनुष्य सामाजिक प्राणी बनता गया ,जहाँ उसे समूह में रहना अधिक सुरक्षित और सुविधाजनक लगा, जिससे बस्तियों का निर्माण हुआ। बस्तियों में भी बलशाली पुरुषों का ही दबदबा रहा, संघर्ष वहाँ भी भयानक हुए, जिनके कारण बस्तियों में नियम बनने लगे, सामाजिक ताना बाना स्थापित होने लगा ताकि संघर्ष, लड़ाई, झगड़े कम से कम हों और वहीं से जोड़े बनना प्रारम्भ हुए। चूँकि नारी प्रारम्भ से सर्वश्रेठ की ओर आकर्षित होती रही, तो बलशाली पुरुष एक से अधिक नारियों को अपने अधीन रखना अपना अधिकार समझने लगा। कालांतर में राजा महाराज, बादशाह, नवाब अपने प्रभाव और सम्पन्नता के प्रभाव से अनेकों रानियों, बेगमों से हरम को सुशोभित करने लगे। समय बदलता गया परन्तु पुरुष मानसिकता में कोई बदलाव नहीं आया । हाँ! श्रेष्ठ पुरुष की परिभाषा समयानुसार बदलती गई। श्रेष्ठ पुरुष को नियंत्रित करने में धर्म का भय ज़बरदस्त प्रभावशाली रहा। पाप, नरक के डर ने उसे अपनी सीमा में रहने पर विवश कर दिया। कभी बलशाली व्यक्ति सर्वाधिक प्रभावी होता था परन्तु समाज के निर्माण के साथ साथ शक्ति का रूप लाठी ,भाला से परिवर्तित होते हुए बन्दूक , टैंक तक पहुँच गये। वैज्ञानिक युग में भौतिक सुख साधनों के विस्तार के साथ ही अधिकतर नारी बलशाली पुरुष के स्थान पर सफल, बुद्धिमान, सेलिब्रिटी, सम्पन्न पुरुष में अपना भविष्य अधिक सुरक्षित अनुभव करने लगी ।

स्त्री पुरुष के सम्बंध आदिकाल से आज तक ज्यों के त्यों चले आ रहे हैं । स्त्री आज भी अपने जीवनसाथी के प्रति पूर्ण समर्पिता रहना चाहती है ,वहीं पुरुष उतनी वफ़ादारी प्रदर्शित नहीं करता जितनी नारी कर दिखाती है और सामाजिक बन्धनों में अधिकांश विवाद और सम्बंध विच्छेद के कारण भी यही होते हैं। समय के साथ साथ नारी स्वतंत्रता या आत्मनिर्भरता ने अपने तेवर बदले हैं परन्तु अधिकांशतः आज भी नारी अपने प्रेमी या जीवनसाथी पर अपना आधिपत्य जमाना अपना अधिकार समझती है और पुरुष भी आज अपने आप को जंगल के खुले शेर की त्तरह व्यवहार करने का प्रयास करता है। वैज्ञानिक आधार पर ये मेरे निजी विचार हैं, आवश्यक नहीं कि पाठक इससे सहमत हों परन्तु विपरीत लिंगी आकर्षण ही प्रेम मोहब्बत का पर्यायवाची है, ममता का रूप परिवर्तित होकर वंश को सुरक्षित रखने की भावनायें हैं और जीवनसंघर्ष प्रेम की भावनाओं का उदगम ।

■ रिज़वान एजाज़ी

मकाम राजस्थान इकाई का द्वितीय वार्षिकोत्सव सम्पन्न

जयपुर (हिलव्यू समाचार)। अंतरराष्ट्रीय महिला काव्य मंच की राजस्थान इकाई का द्वितीय वार्षिकोत्सव 8 फरवरी मंगलवार को वर्चुअल जूम के माध्यम से संपन्न हुआ। वर्तमान में महिला काव्य मंच की विदेश के 34 देशों में 64 इकाइयाँ हैं और भारत के 30 राज्यों में 148 इकाइयाँ कार्यरत हैं। आयोजन में सानिध्य महिला काव्य मंच के संस्थापक नरेश नाज़ जी का रहा। मुख्य अतिथि मकाम की विदेश महासचिव श्रीमती मोनिका ठाकुर रही। विशिष्ट अतिथि की भूमिका में भीलवाड़ा से राष्ट्रकवि श्री योगेन्द्र शर्मा रहे। कार्यक्रम की अध्यक्षता ग्लोबल एडवाइजर डॉ. सुमन 'सखी' दहिया, जयपुर ने की। राजस्थान की प्रदेश अध्यक्ष श्रीमती सुनीता अग्रवाल एवं महासचिव श्रीमती राजश्री रतावा ने कार्यक्रम का संचालन किया। राजस्थान से सत्तर कवयित्रियाँ शामिल हुई। सर्वश्रेष्ठ कार्य रूप में भीलवाड़ा इकाई को चुना गया, जिलाध्यक्ष अर्पिता दाधीच को बधाई देते हुए डॉ. सुमन 'सखी' ने आभार व्यक्त किया।

व्यंग्य

धर्म

उमाकांत भारती, भागलपुर, बिहार

शहर के प्रसिद्ध ज्वैलर्स सेठ शरद जी के दिन की शुरुआत गौ माता को रोटियां खिलाने से होती है। एक झोले में चपातियां लेकर 'रोल्स रायस' विदेशी कार से सड़कों पर निकलते हैं। रोड पर विचरती गौवों को दुलारते- पुचकारते हैं, हरेक को प्रेम से दो-तीन रोटियाँ खिलाते और फिर हाथ जोड़कर माता से मौन आशीर्वाद लेते हैं। इसके बाद ही कोठी पर लौटकर अन्न- जल ग्रहण कर अपने आभूषण की दुकान पर जाते हैं।

'गौ माता को रोटी खिलाने से पुण्य मिलता है और लौकिक जीवन भी सुखमय होता है।' सेठ जी के दिल-दिमाग में यह बात घर कर गई है। इधर कुछेक महीनों से अपने दस वर्षीय इकलौते पुत्र सम्राट को अपने नक़्शे कदम पर चलने का प्रशिक्षण दे रहे हैं।

'बेटा!आज तुम इस गौ माता को फुलका खिलाओ।' एक सीधी गाय के पास सेठ जी ने गाड़ी रोककर कहा। वह गाय फुटपाथ पर घास चर रही थी।

सेठ जी की धोती गाड़ी में कहीं फंस गई थी। इसलिए सम्राट अकेले ही गाड़ी से उतरा। उसने गाय को रोटी खिलाने की कोशिश की, लेकिन गाय हरी-हरी घास चरती ही रही।

वहीं बैठे हुए एक लंगड़े भिखारी ने हाथ फैलाकर उससे रोटी की याचना की। सम्राट ने वे चपातियाँ भिखारी को दे दीं। चपातियाँ पाकर भिखारी ने हाथ जोड़कर क्षीण स्वर में कहा- 'कल से भूखा था मालिक! जय हो आपकी बाल गोपाल!'

तब तक सेठ जी गाड़ी से बाहर निकल चुके थे। भिखारी को रोटियाँ खाते हुए देखकर वे आग बबूला हो गए --'अबे गधे, रोटियां भिखारी को क्यों दीं ?'

पहली बार पिता का रूद्र रूप देखकर सम्राट रोने लगा । उसे समझ में नहीं आई कि उससे गलती क्या हुई ...-'डेड! बूढ़ा बाबा भूखा था। भूखे को अन्न -दान पुण्य है कि नहीं...।'

सुनकर धर्मांध सेठ जी का क्रोध और भी भड़क उठा। सम्राट का कान खींचते हुए बोले--'अबे अधर्मी...नासमझ...गौ माता का आहार भिखारी को देना पाप है ...।'

कुपित सेठ ने सम्राट का कान ऐंठने हुए ही उसे गाड़ी में ढकेल दिया, गाड़ी स्टार्ट की और गौ सेवा अभियान अधूरा छोड़ कर ही घर की ओर गाड़ी बढ़ा दी । पुत्र को कोसते हुए भनभनाते हुए बोले-- 'कल से तुझे साथ नहीं लाऊंगा।'

ग़ज़ल

शिवम तिवारी आरा, बिहार

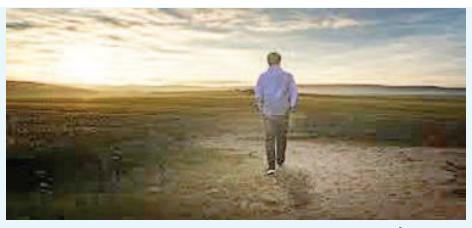

हमारे ज़िन्दगी में चल रही बरसात अब तक है
कि आँखे चुप है फिर भी नम तो बेशक आज अब तक है
दवाई अब अकेलेपन की भी मिलती नहीं हमको
हमारे साथ वाले जो भी थे वो साथ अब तक है

इसी ख़ातिर तो तुमने नक़्श पर पर्दे चढ़ाए थे
यही मसला था जो कि बीच की दीवार अब तक है
जिगर कर के कभी इक दिन किसी का हाथ पकड़ा था
उसी साये की यादों में ये दिल वीरान अब तक है
चले आते हैं लम्हे सामने से, औ गुज़र जाते
ये किस्सा बेबसी का चल रहा आबाद अब तक है
मुहब्बत का वो जिस अंदाज़ से आग़ाज़ था अपना
सुनो, अंजाम को लेकर वही ऐलान अब तक है
तमाशा देखती है, मुस्कुराती अहले महफिल भी
कि लड़का इश्क़ मे यूं इस कदर बर्बाद अब तक है।।

hillviewsamachar@gmail.com

हिलव्यू समाचार

07

जयपुर >> सोमवार, 14 फरवरी, 2022

पैरेंट्स हों या बुजुर्ग, वे अक्सर बच्चों को कुछ न कुछ सिखाते और पढ़ाते नजर आते हैं. लेकिन कोरोनाकाल में अब मम्मियां भी बच्चों से कई चीजें सीख रही हैं. अंग्रेजी की सही प्रोनंसिएशन हो या फिर कोरोना के नियम, बच्चे बखूबी टीचर का रोल निभा रहे हैं. मम्मियां घर का काम खत्म कर सोशल मीडिया, मोबाइल एप्लीकेशन का इस्तेमाल करने और नेट-बैंकिंग जैसी चीजें सीखने में जुट जाती हैं.

बच्चों से सीख रही हैं हाईटेक होने के गुर

टेक्नो-फ्रेंडली मम्मियां

पर्सनल ब्लॉग

हाउसवाइफ सीमा बताती हैं कि डिजिटल जमाने में सभी बेहद तेजी से आगे बढ़ रहे हैं, ऐसे में सोशल मीडिया यूज करना जरूरत से कम नहीं. टेक्नोलॉजी-फ्रेंडली न होने के कारण वे सोशल मीडिया से दूर ही रहती थीं, लेकिन अब बच्चों ने पोस्ट शेयर करने से लेकर अपना पर्सनल ब्लॉग बनाना भी सिखा दिया है. खास बात ये है कि अब वे घर में खुद ही कुकिंग का वीडियो शूट कर यूट्यूब पर अपलोड करती हैं.

अंग्रेजी के शब्द

आकांक्षा बताती हैं कि आजकल हाई सोसाइटी में अंग्रेजी की सही प्रोनंसिएशन आना जरूरी है. पहले इस ओर ध्यान नहीं दिया, लेकिन जब बच्चों के दोस्त घर आते हैं तो वे इंग्लिश में बातें करते हैं, जिसका जवाब हिंदी में देना उन्हें अच्छा नहीं लगा. कॉन्फीडेंट रहने और बच्चों के साथ फ्रैंक होने के लिए उनके कल्चर को अपनाने की सोची. अब बच्चों से प्रोनंसिएशन के अलावा अंग्रेजी के कई नए शब्द भी सीख गई हैं.

60 प्लस वाले स्मार्टफोन यूजर्स की संख्या बढ़ी

स्मार्टफोन की बात आते ही जो तसवीर सामने आती है, वह युवा वर्ग की है. सोशल मीडिया से लेकर ऑनलाइन शॉपिंग व विभिन्न एप्लीकेशन तक सिर्फ युवाओं की ही चर्चा होती है. लेकिन, एक वर्ग ऐसा भी है जिस पर शायद हमारा ध्यान नहीं जाता. यह वर्ग 60 उम्र के अधिक वालों का है. शहरों में ऐसे स्मार्टफोन यूजर्स की संख्या भी बढ़ रही है. तकनीक का प्रयोग कर सुविधाएं लेने व सोशल मीडिया से जुड़कर देश, समाज का हाल जानने की इच्छा ने इस वर्ग को भी स्मार्टफोन के साथ 'स्मार्ट' बना दिया है. यह वर्ग भी युवाओं से खुद को कम नहीं आंकता. वह मानते हैं कि तकनीक और सोशल मीडिया केवल मनोरंजन व शिक्षा ही नहीं, बल्कि व्यवसाय व रोजमर्रा की जरूरतों को भी पूरी करने में मदद करता है.

- स्मार्टफोन व सोशल मीडिया ने लोगों के बीच नजदीकी और बढ़ा दी है. यह वर्ग भी इस बात को मानता है. सीनियर सिटीजन्स ने माना कि मोबाइल फोन पर फेसबुक व वाट्सएप से उन्हें भी अपने विचारों को साझा करने व अपनों से जुड़े रहने में मदद मिली है. कुछ बुजुर्गों ने बताया कि परिवार के बच्चे बड़े हो गए हैं, सभी अपने करिअर को लेकर घर से बाहर दूसरे राज्यों में रहते हैं. ऐसे में स्मार्टफोन ने उनके साथ जुड़े रहने में मदद की. फ्रंट कैमरे की तकनीक ने वीडियो कॉलिंग व सेल्फी को आसान बना दिया.
- यह वर्ग मानता है कि स्मार्टफोन ने अब हर जरूरी काम को उनके हाथों में ला दिया है. ऑफिस व बिजनेस का काम करते हुए भी वह आसानी से पैसे ट्रांसफर, ऑनलाइन शॉपिंग, स्टॉक मार्केट की जानकारी व इंवेस्टमेंट का काम कर लेते हैं. मार्केट में बिजनेस ट्रेंड की जानकारी भी आसानी से मिल जाती है. ऐसा नहीं है कि अब तक यह सेवाएं नहीं मिल रही थीं, लेकिन इन्हें पाने के लिए कंप्यूटर व लैपटॉप को साथ रखना पड़ता था. स्मार्टफोन ने इन सबसे मुक्ति दिला दी है.

घूमने की ज़िद नहीं करते बच्चे

मीनाक्षी सिंह बताती हैं कि कोरोना को लेकर घर में बच्चे सबसे ज्यादा जागरूक हैं. वे जब कभी घर से बाहर निकलते समय मास्क लगाना भूल जाती हैं तो उनके दोनों बेटे तुरंत दरवाजे पर मास्क लेकर पहुंच जाते हैं. नानी के घर और बाहर घूमने की जिद तक नहीं करते.

डांस

प्रेरणा ठाकुर बताती हैं कि वे अक्सर कामकाज में इतनी ज्यादा व्यस्त रहती थीं कि खुद को टाइम नहीं दे पाती थीं, लेकिन बच्चों को देखकर मनचाही चीजें करना सीख गईं. उन्हें डांस का शौक बचपन से था, अब बेटी के साथ खुलकर डांस और एंजॉय करती हैं. उनका मानना है कि गुजरा हुआ पल कभी लौटकर नहीं आएगा और जिस भविष्य की हम चिंता कर रहे हैं, वह भी कब आएगा, ये कोई नहीं जानता.

पेड़-पौधों की देखभाल

सुमन बताती हैं कि उनका 7 साल का बच्चा किसी कुत्ते, बिल्ली या फिर चिड़ियाघर में किसी जानवर को देखता है तो उसके चेहरे पर अलग ही रिएक्शन होता है. वो खुशी से झूम उठता है. सुबह उठकर घर पर गमले में रखे पेड़-पौधों की देखभाल करना उसे काफी पसंद है. ये देखकर एहसास हुआ कि पर्यावरण को लेकर अपनी भागीदारी सभी को निभानी चाहिए.

वृद्धावस्था में बढ़ने लगती है कोलेस्ट्रॉल की मात्रा

वृद्धावस्था में शारीरिक परिवर्तन के साथ-साथ मानसिक परिवर्तन भी होते हैं, जिसके प्रभाव से वृद्धों की स्वादेंद्रियों पर प्रभाव पड़ता है. इससे उन्हें कई भोज्य पदार्थ अच्छे नहीं लगते हैं. भूख में कमी तथा पाचन क्रिया कमजोर हो जाती है. इन सबके अलावा वृद्ध व्यक्तियों में संवेगात्मक भावों की भी कमी होने लगती है. आयु बढ़ने के साथ-साथ बेसिक मेटाबोलिज्म रेट (आधारीय उपापचय दर) में कमी होने लगती है, जिससे इस अवस्था में कैलोरी की आवश्यकता अन्य अवस्थाओं की अपेक्षा कम हो जाती है. चूंकि इस दौरान शारीरिक श्रम अधिक नहीं होता और आंतरिक ग्रंथियों की क्रियाशीलता में भी कमी हो जाती है, ऊर्जा की खपत भी ज्यादा नहीं होती, इसी वजह से कैलोरी की मात्रा कम कर देनी चाहिए. परंतु प्रोटीन की मात्रा में कमी नहीं करनी चाहिए क्योंकि ये हड्डियों व शारीरिक वृद्धि को बनाए रखने के लिए आवश्यक होते हैं. चिकने पदार्थों का उपयोग कम करना चाहिए, क्योंकि वृद्धावस्था में कोलेस्ट्रॉल की मात्रा बढ़ने लगती है, जिससे रक्त धमनियों के रोग तथा हृदय गति अवरुद्ध हो सकती है. पाचन क्रिया भी ठीक नहीं रहती.

विटामिन की कमी

इन सब बातों को ध्यान में रखकर वसायुक्त पदार्थों का कम सेवन करें. वृद्धावस्था में विटामिन की भी कमी देखी जाती है. इसलिए इनके आहार में विटामिन से प्रचुर भोज्य पदार्थ शामिल करने चाहिए जैसे सलाद, पालक, मेथी की सब्जी, बथुआ का साग, चौलाई का साग, काशीफल, तोरई, लौकी, जमीकंद और कटहल इत्यादि. इन सब सब्जियों का पर्याप्त मात्रा में प्रयोग करने से वृद्धों की कब्ज की शिकायत को भी दूर किया जा सकता है.

दांतों की परेशानी

इसके अलावा कब्ज की शिकायत न हो, इसके लिए अनाज में चोकर सहित आटा, मिश्रित अनाज का आटा, दलिया, मिस्सी रोटी का उपयोग करें. प्रायः वृद्धावस्था की सबसे जटिल समस्या उनके दांतों की परेशानी होती है. दांत या तो होते नहीं या बहुत तकलीफ देते हैं, जिससे सभी प्रकार के भोज्य पदार्थों को नहीं खा सकते.

सलाद, पालक, मेथी की सब्जी

वृद्धावस्था में विटामिन की भी कमी देखी जाती है, इसलिए इनके आहार में विटामिन से प्रचुर भोज्य पदार्थ शामिल करने चाहिए जैसे सलाद, पालक, मेथी की सब्जी, बथुआ का साग. इसीलिए जहाँ तक संभव हो मुलायम भोज्य पदार्थों का प्रयोग करें- जैसे खिचड़ी, दलिया, मक्के की रोटी, हरी पत्तेदार सब्जी, सलाद, दाल, शकरकंद, गाजर का हलवा, संतरा, लौकी की खीर, केला, आम, शरीफा इत्यादि. इस बात का अवश्य ध्यान रखें कि वृद्धों के भोजन में अधिक घी, शक्कर, मिर्च-मसालों और चटपटे व्यंजनों की कमी रहे. इसके अलावा चाय, कोको, कॉफी, शराब जैसे एल्कोहलिक पेय पदार्थों में भी कमी करना चाहिए. उपरोक्त सारी बातों की जानकारी अगर हम रखें तो वृद्धावस्था में होने वाली समस्याओं से काफी हद तक बचा जा सकता है.

अगर आपको जिंदगी में बहुत आगे बढ़ना हो तो बुजुर्गों के साथ कुछ मिनट बैठकर जीवन की चर्चा करें. ऐसे में आप पाएंगे कि उन्हें जिंदगी जीने का कितना तजुर्बा हो चुका है और वे आपकी कितनी ज्यादा मदद कर सकते हैं. तो चलिए जानते हैं कि आप अपने दादा-दादी से ऐसा क्या सीख सकते हैं, जो आपको जिंदगी को आसान बना सकता है.

जिंदगी को आसान बनाए दादा-दादी की सीख

- जिस तरह से वे आपको यह बता सकते हैं कि वे किस तरह से मुसीबतों का सामना करते थे, यह अनुभव कोई और नहीं बता सकता.
- जिंदगी में आपको तरह-तरह के लोग मिल जाएंगे, जिनमें से कुछ अच्छे होंगे और कुछ से मिलकर आप तौबा कर लेंगे. बुजुर्गों ने पूरी दुनिया देखी है और उन्हें पता है कि किस प्रकार के लोगों के साथ कैसा व्यावहार करना चाहिए.
- यह बहुत ही जरूरी जिंदगी का सबब है जो आपको उनसे जरूर सीखना चाहिए. वे भी इस जिंदगी के दुखद पड़ाव से जरूर एक बार गुजर चुके होंगे! आपकी नानी या दादा भी आपको साहस और आशा प्रदान कर सकती हैं.
- हममें से कई लोग समय पर सही निर्णय नहीं ले पाने या फिर किसी अपने से खराब तरीके से बोल देने के कारण बहुत पछताते हैं और खुद को कोसते चले जाते हैं. लेकिन अगर बुजुर्गों का सहारा लेकर इस परेशानी को दूर किया जाए तो यह समस्या भी दूर हो सकती है.
- जिंदगी में हमें करने के लिए इतना कुछ है कि हम यह भूल जाते हैं कि हम किस चीज को सबसे ज्यादा अहमियत दें. यह बात आप बूढ़े लोगों से सीख सकते हैं कि जिंदगी में हमेशा सबसे पहले किस इंसान या फिर किस काम को सबसे ज्यादा अहमियत देनी चाहिए.

अच्छे कामों का आदान-प्रदान

ज्ञानकथा

रामायण की घटना है. 14 वर्ष का समय पूरा हो चुका था. अयोध्या में सभी लोग राम, लक्ष्मण और सीता की राह देख रहे थे. भरत नंदीग्राम में वैरागी का जीवन जी रहे थे. वे भी यही सोच रहे थे कि अब राम आ जाएंगे. भरत के मन के एक कोने में ये सवाल भी उठता था कि क्या सचमुच राम आएंगे? इस विचार की वजह से वे परेशान थे. दूसरी ओर राम ने हनुमान से कहा, 'जाओ और अयोध्या का वातावरण देखकर हमें बताओ, उसके बाद हम अयोध्या जाएंगे.' हनुमानजी वेश बदलकर अयोध्या जाते हैं और भरत को सूचना देते हैं कि श्रीराम आने वाले हैं, मैं उनका दूत बनकर आया हूं. इसके बाद हनुमानजी ने भरत को अपना परिचय दिया. भरत ने जैसे ही सुना कि श्रीराम आने वाले हैं, उन्होंने हनुमानजी से कहा, 'आपने मुझे ये जो सूचना दी है, इससे मेरा मन प्रसन्न है. आपने इतनी शुभ सूचना मुझे दी है तो बताइए मैं आपको क्या दूं?' हनुमान जी ने कहा, 'धन्यवाद, ये तो मेरा कर्तव्य है.'

सीख - इस पूरे वार्तालाप में भरत ने जो कहा, 'मैं आपको क्या दूं?' यह संवाद हमें सिखा रहा है कि जीवन में अगर कोई हमारी पसंद का काम करता है तो उससे ये जरूर पूछना चाहिए कि हम आपके लिए क्या कर सकते हैं, अगर हम उसके लिए कुछ अच्छा कर सकते हैं तो जरूर करना चाहिए. समाज में अच्छी क्रिया की अच्छी प्रतिक्रिया, अच्छे कामों का आदान-प्रदान होते रहना चाहिए वर्ना आपसी व्यवहार सूखा-रूखा रह जाएगा.

अरहर दाल या चने दाल जैसी भारी दालें भी दादी के हाथ से जब बनती थीं तो सुपाच्य हो जाती थीं. उनकी उस आदत में छिपे स्वास्थ्य के नुस्खे को आज लोगों ने जाना है. उत्तर भारत में उड़द की दाल से बने व्यंजनों में हींग, लहसुन और अदरक एक अनिवार्य मसाला माना जाता रहा है. खाने वाले को भी बिना इन चीजों के उड़द के नमकीन व्यंजन जैसे कि सर्दियों में बनने वाली साग और उड़द की दाल, उड़द की कचौरियां आदि का मजा नहीं आता. इसमें सेहत की बात यह है कि शरीर में वात बढ़ाने वाली उड़द के इस हानिकारक गुण को लहसुन और अदरक कम कर देते हैं और पोषण बढ़ा देते हैं. उड़द की दाल के दहीवड़े में दही उसके इस तत्व को संतुलित मात्रा में ला देता है. इडली और दोसे में इस्तेमाल होने वाली उड़द की दाल में भले ही लहसुन उपयोग न होता हो, लेकिन उसके साथ सहजन और हरी सब्जियां पड़ा हुआ

सुपाच्य हो जाती थीं दादी के हाथ से बनी दालें

अलग-अलग तरह के छौंक

भिंडी का छौंक अनिवार्य रूप से अजवाइन और मेथी से होगा, शिमला मिर्च की सब्जी में जीरा जरूर पड़ेगा और काशीफल व अरबी की सब्जी में मेथी व अजवाइन का छौंक न लगाओ तो यह खाना बना रहे व्यक्ति के पाकशास्त्र में कम ज्ञान का परिचय माना जाता है. रायते में भुना जीरा मिलाना, देसी घी के छौंक की बजाय उसे खाने में ऊपर से मिलाना, सरसों का तेल आदि ऐसी कितनी चीजें हैं, जिनमें हमारे बुजुर्गों की आदतें ही नहीं, सभी के लिए सेहत का खजाना भी छिपा मिलता है.

प्रोटीन आधारित चीजें

दादी-नानी की रसोई की कुछ चीजें आज की रसोई में भी दिखाई देती हैं. कारण यही है कि वक्त के साथ उनके स्वाद ही नहीं, सेहतमंद होने की बात भी साबित हुई है. उन सबमें हमारे पोषण का डेली डोज होता था, जिसे हम हमेशा स्वाद की बात मानते रहे. उत्तर भारत में सूखे कच्चे आम की फांक डाल कर भोजन पकाना पुराने लोगों की एक सामान्य आदत है. इसमें विज्ञान यह है कि जितनी भी प्रोटीन आधारित चीजें होती हैं, उनमें निहित एमिनो एसिड्स को पचाने के लिए खट्टी चीजों का उपयोग करना चाहिए.

बुजुर्ग के फैन हुए लोग

बुलंद आवाज़ में गाया महाभारत का टाइटल सांग

सोशल मीडिया पर आए दिन तरह-तरह के वीडियो वायरल होते रहते हैं. कई बार तो सोशल मीडिया समाज के बहुत बड़े नुकसान की वजह बन जाता है. अकसर देखा गया है कि दंगों के समय सोशल मीडिया पर कुछ लोग आग में घी डालने का काम करते हैं. लेकिन सोशल मीडिया पर न सिर्फ गलत चीजें वायरल होती हैं, बल्कि बहुत अच्छा देखने को मिलता है. एक ऐसा ही वीडियो वायरल हो रहा है. वीडियो में देखा जा सकता है कि एक मुस्लिम शख्स जिसने कुर्ता पाजामा पहन रखा है, वे महाभारत का टाइटल सांग बुलंद आवाज में गा रहे हैं. इस दौरान उनके साथ कुछ अन्य लोग भी मौजूद हैं. इनमें एक महिला भी शामिल है जिसने बुर्का पहना हुआ है. इस वीडियो को लोग खूब पसंद कर रहे हैं. साथ ही उनकी तारीफ करते हुए वीडियो को शेयर कर रहे हैं. वीडियो पिछले कई दिनों से सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है.

मंत्रों का उच्चारण

बुजुर्ग का अंदाज देखकर लोग उनके 'फैन' हो गए हैं. आलम ये है कि यूजर्स बुजुर्ग का वीडियो शेयर कर जमकर तारीफ कर रहे हैं. वायरल हो रहे इस वीडियो में एक मुस्लिम बुजुर्ग कुछ लोगों के साथ खड़े हैं. तभी अचानक बुजुर्ग महाभारत का टाइटल ट्रैक गाने लगते हैं. इस दौरान बुजुर्ग का एक्सप्रेशन और मंत्रों का उच्चारण सुनकर दंग रह गए क्योंकि, शायद किसी ने यह उम्मीद नहीं की थी कि वह इस तरह से टाइटल ट्रैक को गा सकते हैं. आलम ये है कि लोग काफी गंभीरता से बुजुर्ग को सुनने लगते हैं.

दिल जीत रहा है वीडियो

सोशल मीडिया पर अब यह वीडियो धूम मचा रहा है. अलग-अलग प्लेटफॉर्म पर लोग इस वीडियो को शेयर कर रहे हैं. किसी का कहना है कि बुजुर्ग ने कमाल का गाया है. तेजस्वी यादव ने भी इस वीडियो को शेयर कर बुजुर्ग की जमकर तारीफ की. उन्होंने लिखा, 'मेरा भारत महान! हमारे देश की इसी खूबसूरती, तहज़ीब, भाईचारे और मोहब्बत को कुछ नफरती ताकतें समाप्त करना चाहती हैं लेकिन हम सब ऐसा होने नहीं देंगे. जय हिंद!' वहीं, पूर्व चुनाव आयुक्त डॉ. एसवाई कुरैशी ने भी इस वीडियो को शेयर किया है. दिल जीतने वाले इस वीडियो को अब तक लाखों लोग देख चुके हैं.

बुजुर्गों में कूल्हे के फ्रैक्चर को रोकने के लिए आईआईटी दिल्ली ने एक विशेष तरह का परिधान तैयार किया है. एम्स के जेरियाट्रिक क्लीनिक (बुजुर्ग ओपीडी) में अब तक 800 लोगों ने इस गारमेंट का सफल प्रयोग किया है.

गारमेंट के अंदर कूल्हा संरक्षण उपकरण

इस गारमेंट को आईआईटी की लैब में तैयार किया गया है जबकि इसका पेटेंट भी भारत के ही पास है. कूल्हा संरक्षित इस परिधान के अब तक बेहतर परिणाम सामने आए हैं. एक विशेष तरह के सेल्युलर से बने उपकरण को इनर गारमेंट के अंदर दोनों कूल्हों की तरफ रखा जाता है जो कूल्हों को दोनों तरफ से संरक्षित करता है. उपकरण व्यक्ति के गिरने पर 50 किलो से 140 किलोग्राम तक वजन को सहन कर सकता है. कूल्हा संरक्षित उपकरण को महिला और पुरुष दोनों इस्तेमाल कर सकते हैं. माइक्रो सेल्युलर इंजेक्टेड मोल्डिंग प्लास्टिक के बने 6 इंच के उपकरण को गारमेंट के अंदर जेबनुमा जगह पर रखा जाता है. घुमावदार प्लेट जैसे उपकरण में कई छेद हैं जो व्यक्ति के गिरने पर उनके भार को एक जगह संग्रहित नहीं होने देते. व्यक्ति के गिरने के साथ प्लेट फैल जाती है और बुजुर्ग की हड्डी टूटने से बच जाती है. 800 बुजुर्गों में 2 बुजुर्गों ने प्लेट के टूटने की शिकायत की है, इसका मतलब है कि हम उनके फ्रैक्चर को रोकने में कामयाब हुए हैं. अहम यह है कि टूटने के बाद प्लेट की जगह नई प्लेट लगाई जा सकती है.

बोधकथा

विवाह

स्वामी समर्थ रामदास के बचपन का नाम नारायण था. उनकी माता की बहुत इच्छा थी कि मैं इसका विवाह कर दूं और घर में एक बहू आ जाए. नारायण बचपन से ही साधुओं की तरह रहने लगे थे. उनका अधिकांश समय ध्यान और पूजन में व्यतीत होता था. संत स्वभाव की वजह से नारायण की माता चिंतित रहती थीं कि ये ज्यादा पूजा-पाठ करने लगा तो विवाह ही नहीं करेगा. नारायण का विवाह 12 साल की उम्र में ही तय कर दिया गया और बारात निकल पड़ी. विवाह का आयोजन शुरू हुआ. ब्राम्हणों ने मंगलाष्टक पढ़ना शुरू किया. उसमें कुछ शब्द आए- शुभ, मंगल, सावधान. जैसे ही नारायण ने सावधान शब्द सुना तो उनके मन में अचानक एक बात आई. नारायण ने सोचा कि ये सावधान शब्द मेरे लिए कहा जा रहा है, अब संसार की बेड़ियां पैरों में डलने वाली हैं, तुम अब गृहस्थी में उलझोगे और तुम्हारी वृत्ति ऐसी नहीं है. ये सोचते ही वे तुरंत उठे और वहां से चल दिए. कहा जाता है कि इसके बाद उन्होंने जो भी तप-तपस्या की, उसकी वजह से दुनिया उन्हें स्वामी समर्थ रामदास के नाम से जानती है.

सीख - ये घटना हमें दो संदेश दे रही है- विवाह न किया जाए तथा विवाह क्यों किया जाए? स्वामी समर्थ रामदास ने अपने आचरण से एक बात बताई है कि अगर हम मानसिक रूप से तैयार नहीं हैं तो विवाह नहीं करना चाहिए. अगर विवाह कर रहे हैं तो अच्छी तरह सोच-समझकर करना चाहिए. अगर नासमझी में विवाह कर लेंगे तो वैवाहिक जीवन में दुख ही मिलेगा और नासमझी में विवाह करेंगे ही नहीं तो हो सकता है कि हम चरित्र से ही गिर जाएं. इसलिए विवाह सोच-समझकर और मन से प्रसन्न होकर करना चाहिए.

अपनों के प्यार की जरूरत

परिवार, बच्चों में होती है सीनियर्स की खुशी

युवा पीढ़ी और बुजुर्गों के बीच दूरियां बढ़ने का एकमात्र कारण दोनों की सोच व समझ में तालमेल का अभाव है. दुनिया देख चुके अपने बड़े-बुजुर्गों को दरकिनार कर आजकल के युवा अपनी नई सोच से अपनी जिंदगी को संवारना चाहते हैं. उनकी आजादी में रोक-टोक करने वाले बड़े-बुजुर्ग उन्हें नापसंद हैं. यही कारण है कि वे उन्हें अपने परिवार में देखना ही पसंद नहीं करते हैं. युवा पीढ़ी की इस सोच के अनुसार, बड़े-बुजुर्गों की जगह घर में नहीं, बल्कि वृद्धाश्रमों में है जहां उन्हें उनकी सोच के व हमउम्र लोग मिल जाएंगे, जो उनकी बातों को सुनेंगे और समझेंगे और वहां वे खुश रह सकते हैं. परंतु ऐसा सोचने वाले युवाओं को क्या पता है कि हर मां-बाप की खुशी अपने परिवार और अपने बच्चों में होती है. उनसे दूर रहकर भला वो खुश कैसे रह सकते हैं? अपने बच्चों की खातिर अपना जीवन दांव पर लगा चुके इन बुजुर्गों को अब अपनों के प्यार की जरूरत है. यदि हम इन्हें सम्मान व अपने परिवार में स्थान देंगे तो शायद वृद्धाश्रम की अवधारणा ही इस समाज से समाप्त हो जाएगी. वे सदा से गॉडफादर की भूमिका में रहे हैं. वे अपने अनुभव से जीवन हमें जीने की सीख देते हैं.

बिछुड़ने का दर्द

वृद्धाश्रम, जिसका नाम सुनने में भले ही अच्छा लगे किंतु यहां का जीवन भी सन्नाटे से पसरा है. यहां हर तरफ सन्नाटा है उस तूफान के कारण, जो यहां रहने वालों की जिंदगी में भूचाल बनकर आया था और उन्हें अपनों से दूर कर गया. यहां की सुनसान रातों में भी अपनों से बिछुड़ने के दर्द की सिसकियां सुनाई पड़ती हैं. यहां के हर हंसते चेहरे की पीछे दर्द में डूबा एक भावुक इंसान छिपा है, जो प्यार का स्पर्श पाने मात्र से ही आंसू के रूप में छलक उठता है. अपनी जिंदगी की हर एक घड़ी में अपनों को याद करने वाले बुजुर्ग कोई पराए नहीं बल्कि हमारे अपने हैं, जिन्हें हमने घर से बाहर धकेलकर वृद्धाश्रमों में पटक दिया है.

अस्तित्व को तलाशते बुजुर्ग

परिवार की शान कहे जाने वाले हमारे बड़े-बुजुर्ग आज परिवार में अपने ही अस्तित्व को तलाशते नजर आ रहे हैं. तिनका-तिनका जोड़कर अपने बच्चों के लिए आशियाना बनाने वाले ये पुरानी पीढ़ी के लोग अब खुद आशियाने की तलाश में दर-ब-दर भटक रहे हैं. ऐसे में इनका ठिकाना बन रहे हैं वृद्धाश्रम, जहां इन्हें रहने को छत और खाने को भरपेट भोजन मिल रहा है. बस यहां कमी है तो उस औलाद की, जिन्हें इन मां-बाप ने अपना खून-पसीना एक करके पढ़ाया-लिखाया था परंतु आज उसी ने इन्हें दर-दर ठोकरें खाने को मजबूर कर दिया है. क्या यही संस्कार देते हैं मां-बाप अपने बच्चों को, जिसके कारण बुढ़ापे में उन्हें भरपेट भोजन के लिए भी अपने बच्चों की सेवा-चाकरी करनी पड़ती है और घर के मालिक को अपने ही घर में नौकर या तिरस्कृत व्यक्ति की तरह जीवन गुजारना पड़ता है? इसमें दोष हमारा नहीं है, बल्कि उस पश्चिमी संस्कृति का है, जिसका अंधा अनुसरण करने की होड़ में हम लगे हुए हैं. बगैर कुछ सोचे-समझे हम भी दूसरों की देखा-देखी एकल परिवार प्रणाली को अपनाकर अपनों से ही किनारा कर रहे हैं. ऐसा करके हम अपने हाथों अपने बच्चों को उस प्यार, संस्कार, आशीर्वाद व स्पर्श से वंचित कर रहे हैं, जो उनकी जिंदगी को संवार सकता है. याद रखिए, किराए से भले ही प्यार मिल सकता है परंतु संस्कार, आशीर्वाद व दुआएं नहीं. यह सब तो हमें मां-बाप से ही मिलती हैं.

मेमोरी बढ़ाए संतरे का रस

संतरे का रस न सिर्फ आपको स्वस्थ रखने में मददगार है, बल्कि यह बुजुर्गों की स्मरण शक्ति में सुधार लाने में भी भूमिका निभाता है. एक नए अध्ययन में यह बात सामने आई है.

यूनिवर्सिटी ऑफ रीडिंग में अध्ययन के सह लेखक डेनियल लैंपोर्ट ने कहा, 'दुनिया की आबादी तेजी से प्रौढ़ावस्था की ओर अग्रसर है. सन 2100 तक 60 साल या इससे ऊपर की उम्र के लोगों की संख्या तिगुनी हो सकती है. इसीलिए यह आवश्यक है कि हम प्रौढ़ावस्था में स्मरण शक्ति से संबंधित सुधार को लेकर एक साधारण व सस्ता तरीका ढूंढें. यह अध्ययन 37 स्वस्थ बुजुर्ग (67 वर्ष की औसत आयु) व्यक्तियों पर किया गया, जिन्होंने 8 सप्ताह तक रोजाना 500 मिलीलीटर संतरे के रस का सेवन किया. इन 8 सप्ताह की अवधि के पहले और अंत में उनकी याददाश्त, प्रतिक्रिया का समय तथा मौखिक धाराप्रवाह का अध्ययन किया गया. इसके बाद सभी आंकड़ों को मिलाकर संयुक्त (ग्लोबल कॉग्निटिव फंक्शन) तौर पर उनका विश्लेषण किया गया, जिसके मुताबिक, संतरे के रस का सेवन न करने वाले बुजुर्गों की तुलना में इसका सेवन करने वाले बुजुर्गों के ग्लोबल कॉग्निटिव फंक्शन में 8 फीसदी की बढ़ोतरी देखी गई. संतरे का रस 'फ्लेवोनॉइड्' का महत्वपूर्ण स्रोत है, जिसे फ्लेवोनॉस भी कहा जाता है. हालिया अध्ययनों में यह बात सामने आई है कि फ्लेवोनॉइड् स्मरण शक्ति में सुधार लाता है.

hillviewsamachar@gmail.com

हिलव्यू समाचार

08

जयपुर >> सोमवार, 14 फरवरी, 2022

14 फरवरी मातृ-पितृ दिवस पर विशेष

सर्वतीर्थमयी माता सर्वदेवमय पिता

सर्वतीर्थमयी माता सर्वदेवमय पिता

क्योंकि सारी पृथ्वी की परिक्रमा करने से जो पुण्य होता है, वही पुण्य माता-पिता की परिक्रमा करने से हो जाता है। यह शास्त्रों के वचन है। माता-पिता का पूजन करने मात्र से ही सब देवताओं का पूजन हो जाता है।

माता-पिता भगवान स्वरूप हैं। अतः आपकी परिक्रमा करके मैंने संपूर्ण पृथ्वी की सात परिक्रमाएँ कर लीं हैं। एक ऋषि के पूछने पर कि जब तुम अपने माता-पिता की परिक्रमा कर रहे थे, तो तुमने क्या देखा, इस पर गणेश जी बोले कि उन्होंने पहाड़, नदी, समुद्र, समतल और ग्रह आदि सब देखे, जो कार्तिकेय ने भी देखे थे। तब से गणेश जी प्रथम पूज्य हो गये।

गणेश ने अपने मात-पिता की परिक्रमा कर जीवन में सब कुछ हासिल कर लिया। उसी प्रकार हम सब को अपने माता-पिता की सेवा करने का संकल्प लेना चाहिए। इस दिन माता-पिता को उच्च स्थान पर बैठा कर उनकी पूजा और आरती करें।

एक बार भगवान शंकर जी और पार्वती जी के दोनों पुत्रों कार्तिकेय जी और गणेश जी में होड़ लगी कि, कौन बड़ा? दोनों ही अपने आपको बड़ा बताने लगे, तब वे निर्णय लेने के लिए दोनों शिव-पार्वती जी के पास गए।

इस बात का निर्णय लेने के लिए शिव-पार्वती जी ने दोनों से कहा कि जो भी संपूर्ण पृथ्वी की परिक्रमा करके सबसे पहले यहां पहुँचेगा, उसी को बड़ा माना जाएगा। ये बात सुन कर तत्काल भगवान कार्तिकेय अपने वाहन मयूर को लेकर पृथ्वी की परिक्रमा करने चले गये। परन्तु भगवान गणेश थोड़ा ध्यान लगाकर सोचने लगे। कुछ देर बाद वो उठे और झट से माता पार्वती और पिता शिव के पास जाकर हाथ जोड़कर बैठ गए। भगवान गणेश ने दोनों की आज्ञा लेकर अपने माता-पिता को ऊँचे स्थान पर बैठाया, उनके चरणों की पूजा की और परिक्रमा करने लगे। एक चक्कर पूरा हुआ तो प्रणाम किया। दूसरा चक्कर लगाकर प्रणाम किया। इस प्रकार एक-एक कर भगवान गणेश ने अपने माता-पिता की सात बार परिक्रमा की।

ये सब देख कर माता - पार्वती ने पूछाः पुत्र! ये परिक्रमा तुमने क्यों की? इस पर गणेश ने जवाब दिया-

कैसे मनाएँ मातृ-पितृ पूजन दिवस?

1. अपने माता-पिता को किसी ऊंचे आसन पर बिठाएँ।
2. माता-पिता के माथे पर कुमकुम का तिलक करें।
3. माता-पिता के सिर पर पुष्प और अक्षत रखें, फूल माला पहनाएँ और आरती करें।
4. अब माता-पिता की सात परिक्रमा करें।
5. अंत में माता-पिता के चरण स्पर्श कर उनकी सेवा करने का दृढ़ संकल्प करें।

अपराजिता का मंच महिलाओं को एक माला में पिरोता है : रेणु वशिष्ठ

जयपुर (हिलव्यू समाचार)। रविवार, 13 फरवरी 2022 को कला मंजर संस्था और शिल्पायन प्रशिक्षण संस्थान के सयुंक्त तत्वावधान में ऑनलाइन मंच पर अपराजिता टॉक शॉ की पांचवी कड़ी आयोजित की गई जिसमें इस बार शिक्षाविद व मोटिवेशनल वक्ता रेणु वशिष्ठ को विशिष्ट अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया साथ ही अपराजिता सम्मान से भी सम्मानित किया गया उन्होंने अपनी जीवन यात्रा पर बात करते हुए इस बात पर ज़ोर दिया कि आज व्यक्ति का स्वयं के प्रति ज़िम्मेदार होना ज़्यादा ज़रूरी है। लक्ष्मी अशोक ने सभी का स्वागत करते हुए कहा कि मार्च में अपराजिता टॉक शॉ को ऑफलाइन किया जाएगा। मीनाक्षी माथुर ने शॉ का संचलान करते हुए बताया कि मार्च में टॉक शॉ में महिला दिवस के संदर्भ में कुछ विशेष कार्यक्रम भी रखा जाएगा। इस बार टॉक शॉ में मैसूर, दिल्ली, फालोदी, अजमेर से भी महिलाओं ने शिरकत की।

रेट्रो थीम पर सजे ज़िन्दगी के रंग प्यार के संग में

हिलव्यू समाचार

जयपुर। शिल्पी फाउंडेशन की ओर से वेलेंटाइन डे के अवसर पर शनिवार को ज़िन्दगी के रंग प्यार के संग कार्यक्रम आयोजित किया गया। क्लब अध्यक्ष शिल्पी अग्रवाल ने बताया कि रेट्रो थीम पर आधारित यह कार्यक्रम पिंक हैशटैग कैफे, प्लॉट न. 541, गली न. 06, शनि मंदिर, एसी मार्केट के पास राजापार्क जयपुर में आयोजित किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में पूर्व महापौर विष्णु लाटा, विशिष्ट अतिथि राजस्थान हाईकोर्ट एडवोकेट विकास सोमानी,समाजसेवी पवन गोयल, रिज़वान ऐजाज़ी, मौजूद रहे। कार्यक्रम में मिस इंडिया 2019 श्वेता मोदी, एंकर अंकिता व निर्मला चौधरी शामिल हुए। इस रेट्रो थीम पर आयोजित कार्यक्रम में 70 से लेकर 90 तक के दशक की यादों को ताजा किया गया। उस जमाने के गीत

संगीत के साथ ही ड्रेसेज भी आकर्षण का केन्द्र रहे।इस दौरान आयोजित क्विज में वेलेंटाइन क्वीन का ख़िताब ऋतु शर्मा को मिला। चाईल्ड एक्टर परिणीता शर्मा व रेवल गौतम ने भी इस कार्यक्रम में शिरकत की व रेट्रो थीम पर डांस किया। इसके अतिरिक्त एकल, नृत्य, गायन, सामूहिक नृत्य आदि प्रतियोगिताएं भी आयोजित हुई।

कार्यक्रम के अंत में विजेता प्रतिभागियों को पुरस्कृत भी किया गया। इस कार्यक्रम में सरोज अग्रवाल, मोना शर्मा, शांति भटनागर, गायत्री स्वामी, प्रीति, पूजा शेखावत, भार्गवी जगधारी, एडवोकेट शिव जोशी, डॉ सुनील शर्मा बार एसोसिएशन अध्यक्ष, शिखा शर्मा, डॉ सुनील डंड, दीपा सैनी, आरजे विजय उपस्थित रहे।

विश्व की पहली कृष्ण प्रार्थना लांच

हिलव्यू समाचार

जयपुर। द राइज प्रोडक्शन की डायरेक्टर पूजा माथुर ने 29 जनवरी 2022 को 11.15 पर विशिष्ट अतिथियों द्वारा विश्व की पहली कृष्ण प्रार्थना को अजमेर रोड पर स्थित एक होटल में लांच करवाया। पद्मश्री से सम्मानित और कालबेलिया नृत्य की गुरु मां, बिग बॉस फेम, 165 से भी ज्यादा देशों में अपनी कला का परचम फहरा चुकी गुलाबो सपेरा ने यूट्यूब चैनल sursangam पर प्ले बटन को क्लिक करके लांच किया। विशिष्ट अतिथियों में क्राइम पेट्रोल, सावधान इंडिया व कई फ़िल्मों से सुर्खियों में आये अनिल भागवत जी, श्रृंगार मणी वरिष्ठ नृत्यगुरु ऊषा श्री, विद्याधर नगर वीरेंद्र कुरील, विशेष अतिथि हिल व्यू ग्रुप और पिंक कैफे के ओनर रिजवान एजाज़ी, संपादक व कवियित्री शालिनी श्रीवास्तव, ब्रांड एंकर लेखक व मॉडल कुलदीप गुप्ता व अन्य सभी कृष्ण प्रार्थना को सुनकर भाव विभोर हो गए एवं इसकी भूरी भूरी प्रशंसा की। आमंत्रित मेहमानों में, श्रीराम सेवा संगम समिति और मस्ती की पाठशाला से श्री अनुज श्रीवास्तव और मीनाक्षी श्रीवास्तव, तमाशा फैंसी ड्रेस से श्री मधुशरण सिंघल जी व अर्चना गुप्ता और डॉ मनीष जैसवाल रहे।

मास्टर सूचित माथुर ने कृष्ण ईश्वरीय श्री ने राधा के रूप में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की इन बच्चों ने हाड़ कंपा देने वाली ठंड में अभिनय करके अपने आप में

एक अनूठा उदाहरण पेश किया।

वरिष्ठ नृत्यगुरु उषा श्री ने पूजा माथुर और और उनकी पुत्री हंसिका माथुर को सखी की उपाधि से नवाज़ा साथ ही अपनी विशेष प्रस्तुति भी दी।श्री प्रमोद माथुर जी ने अपनी एंकरिंग से सबका मन मोह लिया।

इस कृष्ण प्रार्थना की विशेषता ये रही कि इसके सभी कलाकार सुर संगम सीज़न 2 के विजेता हैं जो कि पेशेवर कलाकार नहीं है! द राइज प्रोडक्शन ने सभी कलाकारों को निःशुल्क मंच प्रदान कर प्रतिभाओं को आगे आने का अवसर दिया !

कृष्ण प्रार्थना के निर्माता श्री संजीव माथुर,डायरेक्टर व लिरिक्स और धुन पूजा माथुर की है, असिस्टेंट डायरेक्टर हंसिका माथुर है। श्री कृष्ण की अहम भूमिका में मास्टर सूचित माथुर व राधा की भूमिका में ऐश्वर्या श्री रही। म्यूजिक कंपोजर श्री जीवन कौशिक, वीडियोग्राफी श्री बंटी मित्तल, वीडियो एडिटिंग श्री राजेन्द्र सिंह की रही। कृष्ण प्रार्थना को स्वर दिए हैं पूजा पटवा, प्रवीण सिंह, राजेश मौर्य, मोहित माथुर, देवेन्द्र कुमावत, रीटा माथुर, पूजा माथुर, हंसिका माथुर, नन्दिनी सोनी ने।

कार्यक्रम का विशेष आकर्षण मुकेश राणा व पार्टी द्वारा केसरिया बालम रहा।

कृष्ण प्रार्थना वीडियो में काम करने वाले कलाकार सूचित माथुर, ऐश्वर्या श्री, संजीव माथुर, पूजा माथुर, हंसिका माथुर, देवेन्द्र कुमावत, अरविन्द माथुर, साधना माथुर, राजेश मौर्य, अनुप्रिती भार्गव, पूजा पटवा, राखी शर्मा, तिलोत्तमा उपाध्याय, अमृता श्री, वरुण श्री, सोनक्षी श्री, प्रवीण सिंह, डॉ निशा अग्रवाल, सुमन जोधपुरी, नीतू जैन, मीनाक्षी माथुर है।

कृष्ण प्रार्थना की कोरियोग्राफी अनुप्रिती भार्गव व हंसिका माथुर ने की है। कृष्ण प्रार्थना के स्पांसर घंटावालाज़ रेस्टोरेंट, नेही क्रिएशन, नटखट क्रिएशन रहे व विशेष सहयोगी सुरेंद्र सिंह चौहान, एस बबलू, डॉ निशा अग्रवाल, देवेन्द्र कुमावत ,समीर बाबेल, बाबूलाल व अन्य रहे।

पूजा माथुर द्वारा लिखित प्रोजेक्ट शार्ट फ़िल्म 'सही गलत' की घोषणा व पोस्टर का विमोचन किया गया।

तिलोत्तमा उपाध्याय, अनुप्रिती भार्गव, अमृता श्री ने मनमोहक प्रस्तुतियां दी व हंसिका माथुर ने गणेश वंदना पर मनमोहक नृत्य पेश किया। कार्यक्रम का शुभारंभ गणेश वंदना से और ॐ जय जगदीश हरे आरती से समापन किया।

अंत मे पूजा माथुर ने सभी अतिथियों का आभार व्यक्त किया।

बेटी की विदाई पर एक पिता के मन के उदगार

ओ. पी. गवण
वरिष्ठ जनसंपर्क अधिकारी
फुलेरा, जयपुर

अपने परिवारजनों, मित्रों की चश्मदीद गवाही में मेरे जीवन का आज अंतिम अनुष्ठान, संकल्प भी बेटी के ब्याह के साथ पूर्ण हुआ, जिसका आगाज ऋद्धि-सिद्धि के दाता भगवान गणेश की आराधना से हुआ। संगीत की महफ़िल में लोक संस्कृति साकार हुई। हल्दी, मेहंदी के बाद बारात का इंतजार मन उत्कंठा अत्यंत खुशी पैदा कर रहा था, वहीं भगवान भास्कर के उदय के साथ आज लाडली की विदाई पर हर आँख में आंसू बेटी के सुखद भविष्य की कामना बनी हुई थी। अवसर था 4 फरवरी को बेटी के ब्याह का!

मेरे जीवन में 4 का तारीख का अनूठा संयोग है । मेरा विवाह 4 जुलाई 1991 को, बेटे गौरव का अवतरण हुआ 4 दिसम्बर1992 की शाम 4 बजे, जब बेटा गौरव 4 माह का हुआ तो 4 अप्रैल 1993 को शाम 4 बजे फिक्की सभागार में युवा लोकगीत गायक का पुरस्कार प्रदत्त!

और इसी तरह 4 फरवरी 2022 की शाम मेरी बेटी वर्षा का सौरभ संग ब्याह सम्पन्न हो गया। मेरे जीवन यात्रा का अदभुत वह पल था जिसका मैने सपना संजोया वह अनुष्ठान आपके स्नेह और आशीर्वाद से पूर्ण हुआ। बेटी की विदाई पर अपने आप पर नियंत्रण नही रख सका। खुशी के आंसू फूट पड़े।

शुद्ध के लिये युद्ध अभियान के तहत मिस ब्रांड पाये जाने पर बरसाना मेडिकोज पर एक लाख रूपये का किया जुर्माना

कार्यालय संवाददाता

जयपुर। जिला प्रशासन द्वारा चलाये जा रहे शुद्ध के लिये युद्ध अभियान के तहत शुक्रवार को बरसाना मेडिकोज, फिल्म कॉलोनी चौड़ा रास्ता पर मिस ब्रांड का दोषी पाये जाने पर न्याय निर्णायक अधिकारी एवं अतिरिक्त जिला मजिस्ट्रेट (उत्तर) बीरबल सिंह ने खाद्य सुरक्षा एवं मानक अधिनियम 2006 की धारा 52 के तहत अभियुक्त पर एक लाख रूपये की शास्ति अधिरोपित करते हुये भविष्य में इस प्रकार की गलती नहीं करने की हिदायत दी। शुद्ध के लिये युद्ध अभियान के निरीक्षण के दौरान बरसाना मेडिकोज, फिल्म कॉलोनी चौड़ा रास्ता पर आमजनता के लिये विक्रय हेतु

Multi vitamin mineral supplement (zinkomin) के 200 मि. लि. 39 पैक रखे थे। जिनमें से 12 पैकेट को नमूना जांच के लिये लिया गया। जांच में उक्त नमूने मिस ब्रांड पाये गये क्योकि अभियुक्त द्वारा प्रत्येक नमूनों पर उसमें सम्मिलित तत्वों का लेबल नहीं लगाया गया जबकि खाद्य सुरक्षा अधिनियम 2006 की धारा 23 की उपधारा (2) के अनुसार प्रत्येक खाद्य कारोबार कर्ता यह सुनिश्चित करें कि खाद्य के लेबल और प्रस्तुतीकरण जिसके अन्तर्गत उनके आकार, रूप या पैकेजिंग सामग्री की सूचना उपलब्ध उपभोक्ताओं को उपलब्ध करवाई जाए। अभियुक्त द्वारा इस नियम की पालना नहीं कि गई इसलिए प्रकरण मिस ब्रांड होना पाया गया और दोषी पाये जाने पर बरसाना मेडिकोज, फिल्म कॉलोनी चौड़ा रास्ता पर एक लाख रूपये की शास्ति लगाई गई।

Pink #Café

P. No, 541, Lane Number 6, near Shani Mandir, Raja Park, Jaipur, Rajasthan

A place With Lush green, open mic arena
and delicious food with beautiful scenic view
is now open for your friends and family
Always there to Celebrate your special days here

25% Discount offer

Go on Instagram handle of "pinkhashtagcafe"
for more details

PINKHASHTAGCAFE

विप्र फाउंडेशन ने विप्र कल्याण बोर्ड गठन के लिए जलदाय मंत्री का किया अभिनंदन

कार्यालय संवाददाता

जयपुर। विप्र फाउंडेशन राजस्थान जोन-1 ने आज सुबह राजस्थान सरकार की ओर से नवगठित विप्र कल्याण बोर्ड गठित करने में अहम योगदान के लिए जलदाय मंत्री डॉ. महेश जोशी का अभिनंदन कर राज्य के मुख्यमंत्री अशोक गहलोत का आभार प्रकट किया। इस अवसर पर जलदाय मंत्री डॉ. महेश जोशी ने सभी समाजबंधुओं से एकजुट रहने का आह्वान किया।डॉ. जोशी के सरकारी आवास पर पहुंच विफा प्रदेशाध्यक्ष राजेश कर्नल के नेतृत्व में अभिनंदन किया गया। कर्नल के साथ डॉ. महेश जोशी का अभिनंदन करने वालों में

विप्र फाउंडेशन के प्रदेश महामंत्री सतीश शर्मा व अजय पारीक, उपाध्यक्ष अजित गौड़, सचिव प्यारेलाल, पुष्पेंद्र शर्मा, अंशुमन शास्त्री, प्रवीण व्यास, अरुण शर्मा बंटी, सुशील शर्मा पीरनगर, भवन निर्माण समिति के मनोज पांडेय, जमवाय माता के पुजारी भगवती प्रसाद शर्मा, जयपुर हैरिटेज अध्यक्ष शिव मोहन शर्मा, युवा प्रदेशाध्यक्ष पवन शर्मा नटराज, युवा महामंत्री दीपक शर्मा व आशीष गौतम एडवोकेट, चंद्रशेखर जैमिनी, शैक्षिक प्रकोष्ठ के डॉ. दीपेंद्र शर्मा, आईटी प्रकोष्ठ युवा के रोशन शर्मा पावणा, तरुण भारती, डॉ.प्रदीप शर्मा, मीडिया प्रकोष्ठ से संजय त्रिवेदी, वैभव गौतम, श्रीकिशन शर्मा, मनोज भारद्वाज, सूर्य प्रकाश वशिष्ट, राजेश शर्मा, रोशन शर्मा, महेंद्र शर्मा, विष्णु शर्मा, जयपुर हैरिटेज युवा अध्यक्ष विनय शर्मा, शुभम शर्मा, पारस शर्मा, डॉक्टर अंशुल दाधीच, सौरभ शर्मा, प्रेम शर्मा, सुमित शर्मा, मोनिंदर शर्मा आदि उपस्थित थे।

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, एवं मुद्रक **रिज़वान एजाज़ी के लिए** अम्बर ऑफसेट प्राइवेट लिमिटेड, डी.एल. टॉवर, 3-ए, विद्याश्रम संस्थानिक क्षेत्र, जेएलएन मार्ग, जयपुर में मुद्रित एवं महिमा क्लासिक 601, बी-84, रमन मार्ग, तिलक नगर, जयपुर (राज.) से प्रकाशित।
संपादक : शालिनी श्रीवास्तव, फोन : 0141-2620340 मो.: 9460678701, 7976561127 (21 जून 2014 से निरन्तर प्रकाशित) **hillviewsamachar@gmail.com**